॥ सत्यनाम ॥

हार्दिक – श्रद्धाञ्जलि

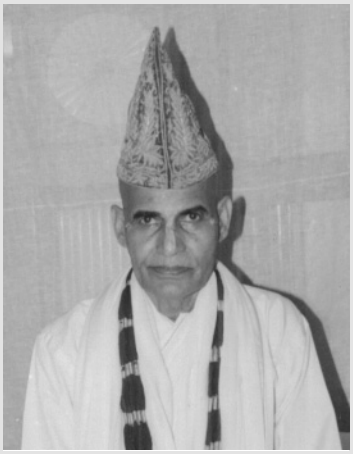

श्री श्री १००८ पंथ श्री हजूर मुकुन्दमणिनाम साहेब

सत्यलोक गमन – १९–०४–२००७ – ५.२० सायं

कबीर गायत्री मन्त्र

सत्यपुरुषाय विद्‌महे, रामानन्दशिष्यायधीमहि ,
तन्नः कबीरः प्रचोदयात् ॥

गुरु गायत्री मन्त्र

ज्ञानरूपाय विद्‌महे, गुरुदेवाय धीमहि,
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

॥ मङ्गलाचरण – श्लोक ॥

१ यस्याऽऽनन्दतरङ्गशीकरसमा, स्वादेन देवाः समे ।
आनन्दाब्धिविगाहनं विदधते, लोकाश्चमोदान्विताः ॥
सत्येशः सहि सद्‌गुरुर्विजयते, कारुण्यलीलाधरो ।
हंसानां निजलोकदः सुखकरो, बोधेन्दु रत्नाकरः ॥

२ यस्यानन्द सुधाकणेन नितरां, माद्यन्ति मुक्तौरताः ।
ये त्यक्त्वा विषयैषणामभयदं, पादं गुरोराश्रिताः ॥
यत्साक्षात्क्रियते यतीन्द्रनिपुणैश्चिन्मात्रमोदप्रदम् ।
तद्वाचां मनसश्चपश्चिमतरं, ध्याये कबीरं महः ॥

३ यो लोकेन्दु समोयमाश्रितवती, कीर्तिः सुधास्यन्दिनी ।
येनाकारि कृतिः सुबीजकनिभा, यस्मै जनाः संस्पृहाः ॥
यस्माज्ज्ञाननदी विनिर्गतवती, यस्योपकारो महान् ।
यस्मिन् ध्यानगते विनश्यति तमः, पायात् कबीरः सनः ॥

४ अत्र स्थाणु सुपत्तने हि पुरुतः, क्षोणीतले संस्थितः ।
लोकातीत महोदयो गुणनिधिः, शास्तिस्वशिष्यान्पुरा ॥
आर्याऽऽनार्यभिदामपास्य जनितो, ह्येकात्मतत्त्वं परम् ।
नानाऽऽडम्बरवारणैकमिहिरः, श्रीमत्कबीरो गुरुः ॥

५ कलौ मोहागारे विषयविषसन्तप्तमनसाम् ।
तमश्चक्रे दूरं मृदु सदुपदेशाऽमृतगिरा ॥
सतां चेतस्तोषीद्विरदयवनानां मृगपतिः ।
परेशं साक्षातं गुरुवरकबीरं हृदिनुमः ॥

६ वेदादि तत्त्वमखिलं निजभाषया यः ,
सम्यग्ध्युवाचवचना विषयं स्वरुपम् ।
तं सर्व वन्द्य चरणं शरणं कबीरं ,
नित्यं नमामि नमतां भवमुक्ति हेतुम् ॥

७ यदीयपादोदकसेचनेन, स्थाणुः प्रपेदे तरुभावमाशु ।
वन्द्यः सतां यो महनीयकीर्तिस्तं श्रीकबीरं सततं नमामि ॥

८ संसार दावावल दैह्यमानान् ,
विलोक्यजीवान् करुणार्ण वोद्राक् ।
वचोऽमृतं यो विमलं ववर्ष,
तं वारि वाहं कमपि प्रणौमि ॥

९ विमल–बुद्धि–विधायक–मव्ययम् ,
हृदयदोष–विपाटन–पाटवम् ।
कमलकान्ति–सुलोचन–संयुतम् ,
प्रणतपाल गुरुं सततं भजे ॥

|| maṅgalācaraṇa - śloka ||

yasyā ' 'nandataraṅgaśīkarasamā, svādena devāḥ same |
ānandābdhivigāhanaṁ vidadhate, lokāścamodānvitāḥ ||
satyeṣaḥ sahi sadgururvijayate, kāruṇyalīlādharo |
hansānāṁ nijalokadaḥ sukhakaro, bodhendu ratnākaraḥ ||

yasyānanda sudhākaṇena nitarāṁ, mādyanti muktauratāḥ |
ye tyaktvā viṣayaiṣaṇāmabhayadaṁ, pādaṁ gurorāśritāḥ ||
yatsākṣātkriyate yatīndranipuṇaiścinmātramodapradam |
tadvācāṁ manasaścapaṣcimataraṁ, dhyāye kabīraṁ mahaḥ ||

yo lokendu samoyamāśritavatī, kīrtiḥ sudhāsyandinī |
yenākāri kṛtiḥ subījakanibhā, yasmai janāḥ sanspṛhāḥ ||
yasmājgyānanadī vinirgatavatī, yasyopakāro mahān |
yasmin dhyānagate vinaśyati tamaḥ, pāyāt kabīraḥ sanaḥ ||

ātra sthāṇu supattane hi purutaḥ, kṣoṇītale sansthitaḥ |
lokātīta mahodayo guṇanidhiḥ, śāstisvaśiṣyānpurā ||
ārya ' 'nāryabhidāmapāsya janito, hyekātmatattvaṁ param |
nānā ' 'ḍambaravāraṇaikamihiraḥ, śrīmatkabīro guruḥ ||

kalau mohāgāre viṣayaviṣasantaptamanasām |
tamaścakre dūraṁ mṛdu sadupadeśā 'mṛtagirā ||
satāṁ cetastoṣīdviradayavanānāṁ mṛgapatiḥ |
pareśaṁ sākṣātaṁ guruvarakabīraṁ hṛdinumaḥ ||

vedādi tattvamakhilaṁ nijabhāṣayā yaḥ,
samyagdhyuvācavacanā viṣayaṁ svarupam |
taṁ sarva vandya caraṇaṁ śaraṇaṁ kabīraṁ,
nityaṁ namāmi namatāṁ bhavamukti hetum ||

yadīyapādodakasecanena, sthāṇuḥ prapede tarubhāvamāśu |
vandyaḥ satāṁ yo mahanīyakīrtistaṁ śrīkabīraṁ satataṁ namāmi ||

sansāra dāvāvala daihyamānān,
vilokyajīvān karuṇārṇa vodrāk |
vaco 'mṛtaṁ yo vimalaṁ vavarṣa,
taṁ vāri vāhaṁ kamapi praṇaumi ||

vimala-budhi-vidhāyaka-mavyayam,
hṛdayadoṣa-vipāṭana-pāṭavam |
kamalakānti-sulocana-sanyutam,
praṇatapāla guruṁ satataṁ bhaje ||

|| सत्यनाम ||

Satya Guru Kabir

Quarterly Journal on the Philosophy of Sadguru Kabir Saheb.

Kabīrābd 608 Chaitra-Vaiśākha-Jyeṣtha-2 2063 April-May-June 2007 Vol. 2 No. 3

Founder
M. Komaldass

H. Chief Editor
Acharya M. Sant
Sarveshwar Das Shastri
Sāhitya-Vyākaraṇa-Vedānta-Sānkhyayogācārya-LLB

Editor in Chief
M. Amardass

Board of Editors
M.Poorundass
M.Ravindradass
M.Prabhatdass
Narainduth

Advisor
Rajnarain

Address
4, Mosque Road
Morcellement St. André
Plaine des Papayes
Mauritius

P.O.Box 637
Port-Louis, Mauritius

Tel. (230) 261 7708
(230) 261 7773
EMAIL: pobox637@yahoo.com

Subscription
4 Yearly Issues
Yearly Subscription Rs. 120.00
Unit Price Rs. 30.00

Printed at
Preciprint
Dr Lister Street, Arcades Jhundoo
Quatre Bornes
Tel. 424 5596

साखी - sākhī

मीठा सबसे बोलिये, सुख उपजे चहुँ ओर ।
बसीकरन यह मन्त्र है, तजिये वचन कठोर ॥ १ ॥
mīṭhā sabase boliye, sukha upaje cahun ora |
basīkarana yaha mantra hai, tajiye vacana kaṭhora || 1 ||

Speak sweetly and politely, and you will make everybody happy; This is just like a charm. Give up harsh words.

Commentary:

When you speak sweetly and politely you make many people happy. Everyone likes to listen to sweet and polite words. They attract people towards you, and they create happiness for all. Harsh words are improper. They hurt people and can turn them against you. Sweet words win friends.

कागा काको धन हरे, कोयल काको देय ।
मीठे वचन सुनायके, जग अपनो करि लेय ॥ २ ॥
kāgā kāko dhana hare, koyala kāko deya |
mīṭhe vacana sunāyake, jaga apano kari leya || 2 ||

Does a crow steal someone's wealth, or does a nightingale give it?
The nightingale only "speaks" musical words and enchants the world.

Commentary:

Everyone likes to listen to sweet and musical words, but not to harsh words. People love the nightingale because of its sweet song, but dislike the crow because of its raucous noise, though they are of the same colour. Koyal is cuckoo, a black bird with sweet voice.

Commentary by *ācārya Mahanta* **Jagdish Das Shastri**
Jamnagar, Gujarat, India

Scheme of Transliteration

अ	a	अं	ṁ	छ	cha	थ	tha	र	ra
आ	ā	अः	ḥ	ज	ja	द	da	ल	la
इ	i	ऋ	ṛ	झ	jha	ध	dha	व	va
ई	ī	ऌ	ḷ	ञ	ña	न	na	श	śa
उ	u	क	ka	ट	ṭa	प	pa	ष	ṣa
ऊ	ū	ख	kha	ठ	ṭha	फ	pha	स	sa
ए	e	ग	ga	ड	ḍa	ब	ba	ह	ha
ऐ	āi	घ	gha	ढ	ḍha	भ	bha	क्ष	kṣa
ओ	o	ङ	ṅa	ण	ṇa	म	ma	त्र	tra
औ	au	च	ca	त	ta	य	ya	ज्ञ	gya

No part of this publication may be reprinted or otherwise reproduced without the prior permission of the chief editor. The opinions and thoughexpressed in the articles published in this journal are those of the writers and not those of the Satya Guru Kabir Committee.

सम्पादकीय

सन्त बड़े परमारथी, शीतल उनके अंग ।
तपन बुझावें और के देवें अपना रंग ॥

समस्त विश्व के इतिहास का जब हम अवलोकन करते हैं, तो प्रायः सभी देशों में ऐसे संत–महापुरुषों की जीवन–गाथायें मिलती हैं जिन्होंने समाज और देश हित में स्वहित का परित्याग किया । यह जानते हुये भी कि उनकी वाणी कटु व कठोर है फिर भी जनहित में कहने में वे नहीं चूके । उनका लक्ष्य "*सर्वे भवन्तु सुखिनः*" व "*वसुधैव कुटुम्बकम्*" का ही था । प्राचीन ग्रन्थों से लेकर वर्तमान के प्रणीत ग्रन्थ जो लोकहित में लिखे जाते हैं वे कालातीत व सार्वभौम होते हैं । ऐसे महापुरुष राजनीतिक क्षेत्र में, वैज्ञानिक क्षेत्र में व धार्मिक क्षेत्र में बहुधा ऐतिहासिक रूप में सभी देशों में मिलते हैं । संत–महापुरुष किसी भी देश में जनमे हों उनके कार्य व उनकी वाणियाँ समस्त मानव जाति के हित में होती हैं । राष्ट्र छोटे हों या बड़े, व्यवस्था एवं सुरक्षा के लिये पुलीस प्रशासन एवं सैन्य–शक्ति की आवश्यकता सभी को होती है । इसमें उस देश की अर्थ व्यवस्था का बहुत बड़ा भाग व्यय किया जाता है, फिर भी समस्यायें होती रहती हैं । यदि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो सन्त एवं महापुरुष अपने कार्य और वचन से जो अनवरत नैतिक शिक्षा का प्रचार करते हैं जिससे बड़े–बड़े अपराधियों के भी जीवन में परिवर्तन हो जाता है; कितना बड़ा कार्य है । इस कार्य हेतु वे धन की पूर्वापेक्षा भीनहीं करते, मानो परमात्मा अपने को इनमें समाहित कर समस्त चराचर का कल्याण कर रहे हों ।

ऐसे ही महापुरुषों में सत्यपुरुष परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब जी का आज से ६०९ *वर्ष* पूर्व भारत के वाराणसी (काशी) लहरतारा सरोवर के कमल–पुष्प पर ज्येष्ठ पूर्णिमा सोमवार को प्राकट्य हुआ । उस समय भारत वासी "त्राहि माम्–त्राहि माम्" की परमात्मा से प्रार्थना कर रहे थे । वेदों का संगायन, मन्दिरों में घण्टानाद व धर्मग्रन्थों के सामूहिक कथा सत्संग प्रतिबन्धित थे । मन्दिरों में भगवान असुरक्षित थे, लाखों मन्दिर तोड़े व लूटे जा चुके थे । यज्ञोपवीत व तिलक धारियों को सरेआमकत्ल कर दिया जाता था । जातीवाद, तन्त्रकर्म का बोलबाला था । बलात् धर्मपरिवार्तन किये जाते थे । ऐसे विकट समय में सद्गुरु का प्रादूर्भाव हुआ । तत्कालीन बादशाह सिकन्दर लोदी को चमत्कारिक रूप से भयंकर जलन–व्याधि से मुक्ति दिलाये, शेखतक़ी को कमाल–कमाली जो मर चुके थे प्राणदान देकर आश्चर्यचकित किये । उन्हें आधीन कर अपना शिष्य बनाये । पण्डित–मौलवियों को अपने अकाट्य तर्कों एवं प्रमाणों से परास्त किये । तान्त्रिक–बौद्ध एवं गोरखनाथ जी को अपनी चमत्कारिक सिद्ध लीलाओं से गर्वहीन किये । ५२ बार उन्हें जान से मार डालने का प्रयास किया गया । कभी पागल हाथी को उन पर दौड़ाया गया. कभी नदी में बाँधकर डुबोया गया, अग्नि में जलाया गया, जमीन में गाड़ दिया गया, तोप से उड़ाया गया, विषपान करया गया, पारा पिलाया गया, जेल में बन्द किया गया, दीवाल में चुनवा दिया गया आदि–आदि, किन्तु चूँकि वे हमारे जैसे पञ्च–तत्त्व के शरीरधारी नहीं थे, अतः विरोधियों को हर बार मुहँकी खानी पड़ी और परास्त होकर उनके शिष्य बन गये । सद्गुरु कबीर की लाखों की संख्या में पद्यमय (विभिन्न भारतीय भाषाओं में) वाणियाँ हैं, जो सभी प्राचीन धर्मग्रन्थों का सार तत्त्व है । प्रथम बार सद्गुरु ने अध्यात्म के गूढ़ तत्त्वों को उत्तर भारत की जन–भाषा "*हिन्दी*" में समझाया । संस्कृत को उन्होंने कठिनता से प्राप्त कूपजल की संज्ञा दी, तथा हिन्दी को निर्मल सरिता गंगा जल की; जो सहज व सर्वसुलभ है । *१२० वर्षों* तक सद्गुरु कबीर साहेब भारत और अन्य देशों की यात्रा करके लोगों के बाह्याडम्बर एवं भ्रम आदि के निवारण हेतु कार्य करते रहे । उनके शिष्यों में हिन्दू–मुस्लिम, पण्डित–मौलवी, ऊच्च वर्ग–निम्न वर्ग, सभी मतों के मानने वाले लोग थे ।"*हाथ कङ्कन को आरसी क्या ?*" भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में कबीर नगर जिला स्थित मगहर ग्राम जो आमी नदी के तट पर बसा है, प्रत्यक्ष प्रमाण है । एक ओर सद्गुरु को मुस्लिम समुदाय द्वारा अक़ीदत के फूल चढ़ाये जाते हैं तथा दूसरी ओर हिन्दू समुदाय के सन्त,भक्त–गण पूजा–पाठ, सत्संग करते हैं । आज ६०९ वर्ष हो रहे हैं सद्गुरु का पूरा जीवन मानवता की रक्षा में लगे लोगों का प्रेरणा श्रोत है । मात्र यही एक महापुरुष हैं जिनकी इस प्रकार की कब्र और समाधी देखने में आती है व सभी वर्ग के जन समुदाय उनकी अर्चन–वन्दना करते हैं ।

सद्गुरु कबीर साहेब जी ने अपने विचारों को अगली पीढ़ीयों तक पहुँचाते रहने के लिये कई आचार्य गद्दियों का भी निर्माण अपने समय में किया और योग्य शिष्यों को पीठाधीश नियुक्त किये । इनमें बाँधवगढ़ (भारत–उत्तरप्रदेश)प्रमुख रहा, जहाँ धनी धर्मदास साहेबजी के सुपुत्र मुक्तामणिनाम साहेब को प्रथम पीठाधीश(हजूर)नियुक्त किये । आगे के लिये ४२वंशों का नाम भी प्रदान किये । कालान्तरमें यह विन्दवंश (गृहस्थ–परम्परा) *पं:श्री दयानाम साहेब जी* (दामाखेड़ा)पर आकर पूर्ण हो गया । तब नादवंश (सन्यासी–सन्त परम्परा) का शुभारम्भ हुआ । इसका आचार्य गद्दी वर्तमान में भारत छत्तीसगढ़ राज्य स्थित खरसिया नगर में है । यहाँ प्रथम नादवंश आचार्य पं.श्री गुन्धमणि नाम साहेब, द्वितीय आचार्य पं. श्री प्रकाशमणिनाम साहेब, तृतीय आचार्य पं. श्री उदितमणिनाम साहेब, चतुर्थ आचार्य पं. श्री मुकुन्दमणिनाम साहेब एवं पञ्चम वर्तमान में पं. श्री हजूर अर्धमणिनाम साहेब जी पीठासीन हैं । इनमें से *प्रथम आचार्य श्रीगुन्धमणिनाम साहेब जी* उस समय के कबीर पन्थ के हजारों आश्रमों को पुनः एक सूत्र में पिरोने का कार्य किये क्योंकि पं.श्री दयानाम साहेब अस्वस्थ रहते थे तथा अल्पायु में ही उनका सत्यलोक गमन हो गया था । *द्वितीय आचार्य पं:श्री प्रकाशमणिनाम साहेब* जो हिन्दी व संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, ने बहुत से संस्कृत एवं हिन्दी ग्रन्थों की रचना की; साथ ही सद्गुरु की मूल वाणियों बीजक–साखी ग्रन्थ आदि की सरल, सुबोध व्याख्या दिये । इन्होंने साहित्यिक सम्पदा की अत्यधिक अभिवृद्धि की । *तृतीय आचार्य पं:श्रीउदितनाम साहेब जी* का ध्यान सद्गुरु कबीर साहेब के *प्राकट्य–धाम वाराणसी–लहरतारा* की ओर गया । उन्होंने अपना पूरा जीवन उसधाम के निर्माण में लगाया । साथ ही काशी में जो विद्या की नगरी है सैकड़ों संस्कृत–हिन्दी के *सन्त–विद्वान* तैयार किये । यह मेरा परम सौभाग्य रहा कि मेरी "सन्त"दीक्षा पन्थ श्री हजूर प्रकाशमणिनाम साहेब जी के शिष्य पूज्य गुरुवर सन्त श्री किशोर दास जी साहेब द्वारा हुई । जब मॉरीशस श्री कबीर काऊँसिल – वाक्वा के महन्त के रूप में मुझे चुना गया; तथा आदरणीय भक्त श्री आदिनाथदास वृजमोहन साहेब जी के अनुरोध व पूज्य महन्त श्री हेमन्त दास साहेब के प्रार्थना–पत्र भेजे जाने पर पं:श्री हजूर उदितनाम साहेब जी द्वारा महन्ती–विधि (वर्तमान पं. श्री अर्धनाम साहेब द्वारा मेरा पञ्जा लिखा गया) उनके व अन्य सन्त–महापुरुषों के समक्ष श्री कबीर बाग लहरतारा में लघु रूप में सम्पन्न हुई । *चतुर्थ आचार्य पं:श्री मुकुन्दमणिनाम साहेब जी* लगभग ९ वर्ष ही आचार्य पद रहे । किन्तु इसके पूर्व लम्बी अवधि *श्री धर्माधिकारी* पद पर रहते हुये "*आचार्य गद्दी खरसिया–आश्रम*" का पूरा काया–कल्प ही कर दिये; आधुनिकतम व्यवस्थाओं से पुर्ण सुसज्जित । आचार्य काल में मॉरीशस के लिये वे ५ *महन्तों को "पञ्जा" प्रदान किये* । उनका १९ अप्रैल ०७ को सायं ५.२० बजे महाराष्ट्र प्रान्त में धर्मयात्रा के दौरान हृदय–गति अवरोध से सत्य–लोकगमन हुआ । उनकी समाधी–विधि *आचार्य गद्दी "खरसिया"* में पूरे विधि–विधान के साथ २२ अप्रैल को सभी महन्त, सन्त व भक्त समाज द्वारा की गई । नये *पञ्चम आचार्य पं:श्री अर्धमणिनाम साहेब जी* का चुनाव भी उसी दिन किया गया । वर्तमान नवयुवक आचार्य साहेब से पूरे कबीर पन्थ के उज्वल विकास की आशायें जुड़ी हुई हैं ।

मॉरीशस में सत्यलोकवासी हजूर मुकुन्दमणिनाम साहेब जी के निमित्त श्री कबीर काऊँसिल–ला कावेर्न २–वाक्वा में "श्रीमद् आदिब्रह्म निरुपणम्"

.....continued on page 28

॥ सत्यनाम ॥

जिन खोजा तिन पाइया

सत्यलोकवासी श्री श्री १००८ पंथ श्री हजूर मुकुन्दमणिनाम साहेब श्री कबीर धर्मस्थान–खरसिया–भारत

सुख की प्राप्ति के लिये मानव अनन्तकाल से प्रयत्नशील है । विचारशील मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन–क्षेत्र पर दृष्टिपात करता है, एवं विभिन्न साधनों का सहारा लेकर अपनी सुखमयी खोज जारी रखता है । मोक्षात्मक सुख उन्हीं को प्राप्त हो सकेगा जिन्होंने "*स्व*" की प्राप्ति के लिये गहरा गोता लगाया है और अपने मानव जीवन की महानता को समझा है । सत्य में स्थित होना ही हमारा परम उद्देश्य है । मननशील मानव मानसिक भावनाओं को मजबूत बनाने के लिये किसी उत्तम कोटि के सद्गुरु की खोज करता है । क्योंकि जिसने सुख के रास्ते को देखा है और चलकर उसकी कठिनाईयों का अनुभव किया है वही सहनशील अनुभवी सद्गुरु सही सुख के साधनों को बता सकता है । खोज कर पाने के लिये खोज सच्ची होनी चाहिये, लगन वास्तविक दिशा का निर्देश करने वाली होनी चाहिये । खोजने के लिये अपने आपको खो देना पड़ता है , मन के सात्विक भावों को जगाना पड़ता है । यदि सच्ची खोज है तो स्वयं को खो देना होगा, "*स्व*" की खोज के लिये "*पर*" को भुलाना होगा, क्योंकि परात्मक दृश्यमात्र जगत "*स्व*" से भिन्न है । "*स्व*" और "*पर*" दोनों का स्वभाव ही पृथक् है, "*पर*" की आसक्ति के कारण साधक को परेशानी उठानी पड़ती है । परात्मक जगत में रमा हुआ मन शीघ्र अपनी रम्य भूमि को छोड़ना नहीं चाहता । क्षणभंगुर सुखाशक्ति की प्रबलता के कारण चेतन जीवात्मा की यह दशा है, जो कि खोज में असफल रहता है । सांसारिक "*प्राणी–पदार्थों*" में मन इसीलिये रमा है कि विवेकी–महापुरुषों की संगति नहीं मिली । जिन वैराग्यवान् मनस्वी महापुरुषों ने संसार के मायाजाल को समझा है और समझकर हित और अहित, कर्तव्य और अकर्तव्य, सार और असार एवं कल्याण और अकल्याण को पृथक् करके हितादि का ग्रहण और अहितादि का त्याग किया है उन्हीं के द्वारा हमारी विवेक शक्ति इस दिशा में प्रबल होगी और हम अपनी खोज में सफल होंगे । भूल के कारण हम "*पर*" की खोज में व्यस्त हैं इसीलिये हमारी खोज सही दिशा में काम नहीं कर रही । *"वस्तु कहीं, खोजे कहीं क्यों कर आवे हाथ"* । जिसकी खोज में सम्पूर्ण साधकवर्ग परेशान है वह तो अपने अन्दर ही है :–

"बैठा है घट भीतरे, बैठा है साचेत ।
जब जैसी गति चाहिये , तब तैसी मति देत ॥"

इस साखी के अनुसार हमें अपने आप में खोज करने की प्रबल प्रेरणा प्राप्त होती है और सर्वोत्तम मानव जीवन ही अपने आप की उपलब्धि का मुख्य केन्द्र है । नर जन्म ही सम्पूर्ण विद्याओं का केन्द्र है तथा सुख का प्रशान्त महासागर । "*स्व*" में समाहित होने पर ही हम "*स्वस्थ*" होंगे "*स्व*" की खोज के लिये "*हँस*" भूमिका अपनानी होगी । विचार, विवेक और वैराग्य के जागते ही हमारा यह खोज का रास्ता सरल हो जाता है और मानव जीवन सरस हो जाता है एवं गहरे पानी में पैठने की हिम्मत बँध जाती है । मानव अनन्त काल से अपने गन्तव्य स्थान को खोज रहा है , खोजने के रास्ते भिन्न–भिन्न हैं , किन्तु प्राप्तव्य–आत्मतत्त्व एक ही है । अनन्त काल के बाद भी मानव अपने मङ्गलमय *"स्व"* स्वरूप में स्थिर नहीं हो पाया ।

यदि पाना है तो अपने पने को मिटा देना होगा । आशा–तृष्णा–मोह–ममता एवं सम्पूर्ण मानसिक विकारात्मक वासनाओं को मिटाना होगा तथा समस्त बहिर्मुख वृत्ति को मटियामेट करना होगा :–

"मिटादे अपनी हस्ती को , यदि कुछ मर्तबा चाहे ।
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलज़ार होता है ॥"

सद्गुरु कबीर साहेब का भी यही कहना है कि मेरे जैसा जीवन–मुक्ति का सुख चाहता है तो सभी आशाओं को छोड़ना होगा :–

"जो तू चाहे मुझको , छाँड़ सकल की आश ।
मुझ ही ऐसा हो रहो , सब सुख तेरे पास ॥"

जब तक कामनाओं का समूलोन्मूलन नहीं नहीं होता तब तक खोज जारी रहेगी । हम अपनी खोज पूरी करना चाहते हैं तो हमें , त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, और विवेकी बनना होगा , तभी सच्चे खोजी बन सकेंगे । वस्तु हाज़िर है केवल उसका पर्दा हटाना है । अज्ञान के कारण हम अपने "*स्व*" स्वरूप को भूल गये हैं । पर्दे के घेरे में आ गये हैं । स्वाध्याय, सत्संग एवं सेवा–भक्ति रूप साधनों के द्वारा तथा वैराग्यवान् विवेकी महापुरुषों की सत्संगति से हमारी खोज पूर्ण होगी । जिसे पाकर हम निहाल हो जायेंगे । "*मैं अजर, अमर, अविनाशी एवं मङ्गलमय हूँ*" यही हमारी खाज का अन्तिम लक्ष्य है । "*स्व*" स्वरूप का निश्चय हो जाने पर साधक मग्न होकर कह उठता है :– "*कृतं कृत्यं, प्राप्तं प्रापणीयम्*" ॥ ■

॥ सत्यनाम ॥

श्रीमत्प्रकाशमणिगीता
अनक्षर-सार-शब्द-साधना
ग्रन्थ-विवेचन

इस महान व पावन ग्रन्थ की रचना "*आचार्य गद्दी-खरसिया*" के द्वितीय आचार्य (हजूर)सतलोकवासी *श्री श्री १००८ पंथ श्री प्रकाशमणिनाम साहेब जी* द्वारा विक्रम संवत २०१३ फाल्गुन (सन् १९५७) में की गई । *सद्गुरु कबीर साहेब जी* का दिव्य ज्ञान "*अनक्षर-सार-शब्द-साधना*" के बारे में क्रमशः "*सत्संङ्ग*" से प्रारम्भ कर "*मोक्षप्राप्तिः*" तक के विषयों का १८ सोपानों में सुन्दर ढंग से वर्णन है । संस्कृतश्लोक जो विषेशतया अनुष्टुप, शार्दूलविक्रिडित, आर्या छन्दों में आबद्ध हैं, सरल व बोधगम्य हैं । *पूज्य गुरुवर संत किशोर साहेब* जी मुझे इसी ग्रन्थ के माध्यम से "*सार-शब्द*" का उपदेश किये । उनके ही अनुसार वे "*साधक*" व पूज्य हजूर साहेब जी "*सद्गुरु* " के रुप में सम्वाद का परिणाम यह महान ग्रन्थ है ।

उपोद्घातः :- साधक, सद्गुरु से प्रार्थना करते हैं कि कलियुग में जीवन बहुत अल्प है । तप-यागादिक से अधिक सुगम मार्ग जीवों के कल्याणार्थ बताने की कृपा करें । प्रार्थना को स्वीकार कर सद्गुरु "*जीवन-मुक्ति*" का मार्ग "*अनक्षर-सार-शब्द-साधना*" जैसे गूढ विषय का प्रतिपादन प्रारम्भ करते हैं ।

१. *माङ्गलिकयोग* :- इस प्रथम अध्याय में भिन्न-भिन्न छन्दों में आबद्ध श्लोकों द्वारा पूज्य हजूर साहेब जी ने सत्यपुरुष परमात्मा सद्गुरु कबीर साहेब एवं उनके दीक्षा-गुरु पूज्य श्री जगन्नाथ साहेब जी का मङ्गलाचरण किया है । अपने ईष्ट की ग्रन्थारम्भ में स्तुति हिन्दू-आर्य संस्कृति में सदा से ही परम्परा रही है ।

अनायासेन संसार - पारगामी भवेन्नरः ।
यद्गवीतरणीसंस्थस्तं कबीरमहं श्रये ॥

२. *सत्सङ्गतियोग* :- साधक सत्सङ्ग की महिमा बताने की प्रार्थना करते हैं । सद्गुरु समझाते हैं :-सत्सङ्ग उस कल्पतरु के समान है जिसकी छाया में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों महापुरुषार्थों की प्राप्ति सम्भव है । मूढ विद्वान् हो जाता है । पाप-पुञ्ज के नाश का साधन वैराग्यनिष्ठ संतो के शरण में ही प्राप्त होता है ।

सदुपदेशसम्प्राप्तिः , सद्गुरोः प्राप्तिरत्र च ।
तस्मात्सर्वात्मना कार्यः , सतां संगो गुणाकरः ॥

३. *साधुसेवायोग* :- साधक के प्रश्न के उत्तर में सद्गुरु कहते हैं :- साधु-सन्त-महात्माओं की सेवा जीवन को पावनता की सुरभि से पूरित कर देती है ।

खोद खाद धरती सहे , काट कूट बनराय ।
कुटिल वचन साधु सहे, और से सहा न जाय ॥

सन्त जन सदा परोपकार में प्रसन्न होते हैं । उनका जीवन निःस्वार्थ भाव से समाज कल्याण हेतु ही होता है।

साधु लक्षणसंयुक्ताः , किन्तु ये ज्ञानशालिनः ।
सर्वभावेन ते सेव्याः , सदैव फल सिद्धये ॥

४. *सद्गुरुप्राप्तियोग* :- वैद्य गण असाध्य रोगों से मुक्ति, कर्मकाण्डी व तान्त्रिक गण ग्रहों एवं अदृश्य बाधाओं से मुक्ति दिला सकते हैं, किन्तु अजरता और अमरता सद्गुरु द्वारा ही प्राप्त हो सकता है । जन्मजन्मान्तरों से मोह-निद्रा में सोने वालों को जगाने का सामर्थ्य मात्र सद्गुरु में ही है । भवसागर को पार करने में सद्गुरु महापोत के समान हैं । ऐसे सद्गुरु सर्वस्व सम-र्पण करने से ही प्राप्त होते हैं ।

सर्वस्वमर्पणं कुर्याः , कुर्याश्चात्मनिवेदनम् ।
एवं प्रकुर्वतो बाढं , सद्गुरोः प्रीति सम्भवः ॥

५. *साधककर्तव्ययोग* :- सत्संग में सन्त मिलते हैं, सन्तों द्वारा सद्गुरु और सद्गुरु से मोक्ष की शिक्षा प्राप्त होती है । शुभकर्मों को आत्मसात् व पापकर्मों का परित्याग यह क्रियायोग है, जो साधक के लिये आवश्यक है । ब्रह्मचर्य साधक को ऊर्ध्वरेतस् बनाता है, ऋषि-मुनि इसीलिये संयमित जीवन जीते थे । मृगतृष्णा साधक की साधना में बाधक है । अतः सन्तोष धन की महिमा है । सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करना , सद्गुरु की वाणियों का श्रवण, मनन, निदिध्यासन, व्यसनों का परित्याग परमावश्यक है ।

सद्गुरु की कृपा व युक्ति से सत्य शब्द का उदय, शब्द में सुरति की धारणा की सिद्धि तथा धारणा की दृढ़ता सिद्ध होने पर ध्यान की प्राप्ति होती है ।

धारणादार्ढ्य सम्पत्तौ , ध्यान प्राप्त्यै लभेद् बुधः ।
ध्यानं तदेव संज्ञेयं , प्रत्ययस्यैकतानता ॥

६. *सद्गुरूपासनायोग* :- सभी प्रकार की विद्याओं की प्राप्ति के तीन ही उपाय हैं । प्रथम गुरु की सेवा करके, द्वितीय धन देकर, तृतीय विद्या का आदान-प्रदान से । सद्गुरु से ज्ञान मात्र सेवा करके ही प्राप्त हो सकता है, अतः करुणा के सागर सद्गुरु की सब प्रकार से सेवा करनी चाहिये ।

तस्मात्सेव्यः प्रयत्नेन , सद्गुरुः करुणार्णवः ।
मुक्तिदाता भयत्राता , यमपाशविमोचकः ॥

७. *निजनामप्राप्तियोग* :- आत्मा का कल्याण करने वाला नाम ही निजनाम, सारनाम व आदिनाम है । इसी नाम के अवलम्बन से भव मुक्ति सहज हो सकता है । आत्मा सत्य है और निजनाम भी "*सत्*" है । सत् के जपयोग से सुरति धीरे-धीरे एकाग्र और स्थिर हो जाती है, कालान्तर में यही सुरति, शब्द-सिन्धु में विलीन होती है । गुरुदीक्षा में सद्गुरु यही निजनाम शिष्य को प्रदान करते हैं ।

श्री सद्गुरोः प्राप्तिरवश्यमेव , कार्या तु नाम्नः सुखदायकस्य ।
तेनैव मुक्तिर्लभतेऽयमात्मा , इत्याह स्वाचार्यप्रकाशनामा ॥

८. *सद्गुरुध्यानयोग* :- ध्यान के बल से साधक ध्येय-रूप को प्राप्त करता है । जैसे एक साधारण कीट, भृङ्गी का ध्यान करते-करते भृङ्गी ही बन जाता है । "*वीतरागचित्तावलम्बनाद्वा*" (*योगदर्शन*) वीतराग सन्तों के चित्त में अपना चित्त मिलाकर ध्यान करने से ध्यानी भी वीतराग हो जाता है । अज्ञान घनघोर अन्धकार है तो सद्गुरु सूर्य के समान हैं । सूर्योदय से अन्धकार स्वतः समाप्त हो जाता है ।

अन्धतमसमज्ञानं , सद्गुरुः सूर्यसन्निभः ।

तमः कुत्रवतिष्ठेत , प्रोदितेत्वंशुमालिनि ॥

९. *निजनामजपयोग* :– सत्स्वरुप परम तत्त्व है । सन्नाम ही निजनाम है इसलिये इसका जाप मुक्ति का देने वाला है । जाप करने की क्रिया में चित्त को रोककर रखना जपयोग कहलाता है , साधक के लिये यह प्रथम सोपान है । जपयज्ञ– वाचिक, उपांशु और मानस भेद से तीन प्रकार का है । ऊच्च स्वर–मात्र ओंठ हिलाना और मन में ही जाप करना । तृतीय मानस–जप सर्वश्रेष्ठ है जो अभ्यास करते–करते सिद्ध हो जाता है । जिस प्रकार "*राम*" के निरन्तर जप से दशम द्वार में *ररङ्कार, ओंकार* के निरन्तर जप से त्रिकुटी में "ॐ" ध्वनि का उद्गम होता है । इसी प्रकार प्रेमपूर्वक सन्नाम का जाप करने से अन्तर्घट में "*सद्*" ध्वनि का उदय हो जाता है ।

अहोरात्रं स्मरिष्यन्ति , शुद्धेन मनसा नराः ।
तेषां द्रागेव भो ! ध्यायिन् , सारशब्दोदयो भवेत् ॥

१०. *सारशब्दोदययोग* :– जब सुरति रूप पक्षी सत्शब्द के पेड़ पर बैठकर अत्यन्त स्थिर हो जाता है , उस समय वह अपने में आत्म ज्योति का साक्षात्कार करता है । सत्यलोक में पहुँचे हुये हँसजन सत्यपुरुष की प्राप्ति हो जाने पर भवसागर में पुनः नहीं लौटते । जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींच लेता है वैसे ही सारशब्द "सत् " जीव की सुरति को संसार से अपनी ओर खींच लेता है । यह "सत्शब्द " रूप परा वाणी योगी जनों को भी प्राप्त नहीं हो सकती है; किन्तु सद्गुरु की कृपा इसकी प्राप्ति में सहायक है ।

योगिनामप्यगम्या सा , परावाक्शब्दरूपिणी ।
सद्गुरोः कृपया लभ्या , मोक्षमन्दिरप्रापिका ॥

११. *सारशब्दयोग* :– सुरति का शब्द के साथ योग होने को "*शब्द–योग* "कहते हैं । साधक शब्दयोग रूपी महापोत के सहयोग से आत्म–प्राप्ति लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है । सद्गुरु की कृपा से सारशब्द का उदय हो जाने पर युक्ति पूर्वक इस शब्द में सुरति को लगा देना चाहिये ।

सारशब्दोदये जाते , सद्गुरोरनुकम्पया ।
नियोज्या सुरतिस्तत्र , युक्त्या सद्गुरुलब्धया ॥

१२. सुरतिशब्दैकतायोग :– सुरति के शब्द में लीन होने को विद्वज्जन शब्दरूपता कहते हैं । क्योंकि शब्द के रूप को पहुँची हुई सुरति, शब्द के समान ही हो जाती है । जैसे गंगा–यमुना के समागम हो जाने पर दोनों के जल एक समान हो जाते हैं । इस दशा को प्राप्त कर लेना मानव जीवन का परम धन है ।

अयमेव परो लाभः , इदमेव परं तपः ।
मुमुक्षुणां मनुष्याणामयमेव परोनिधिः ॥

१३. *ज्ञानोदयविचारयोग* :– शब्द में जब सुरति लीन हो जाती है तब साधक को ऐसे ज्ञान की अनुभूति होती है कि मैं असंग हूँ , बन्धनमुक्त हूँ , मुझमें जो सुख–दुःख व मोह की प्रतीति हो रही है ये सब सत्त्व–रज–तम गुणों के सम्बन्ध से हैं । जो कर्त्ता है वही भोक्ता है , जब मैं कर्त्ता नहीं तो भोक्ता भी नहीं । मेरा आत्मस्वरुप समस्त द्वन्द्वों से रहित सूर्य के समान प्रकाशमान और निर्मल है ।

विशुद्धरूपोऽहमपास्तद्वन्द्वः , शुद्धात्मरूपोऽस्मि प्रमोदसिन्धुः ।
अनाद्यनन्तश्च विमुक्तरूपो , ज्ञानेन ध्यानेन कृतात्मतोषः ॥

१४.सोऽहँशब्दादिविचारयोग :– निरक्षर सारशब्द, सोऽहँ शब्द में मिला हुआ है । सोऽहँ शब्द के मन्थन करने से वह सारशब्द अलग हो जाता है । सद्गुरु की युक्ति से सोऽहँ शब्द के विलय होने पर सारशब्द ही अवशिष्ट रह जाता है । श्वासों में सोऽहँ समाया हुआ है , जिसकी गति दशम द्वार तक ही है । सोऽहँ सुरति की विहङ्गम डोरी निरन्तर शब्द रूप सारशब्द से बँधी हुई है – *"शब्द विहङ्गम चाल हमारी, कहैं कबीर सद्गुरु दई तारी"* । सारशब्द के विमान पर जिस साधक की सोऽहँ सुरति चढ़ गई है वह अपने ध्रुव लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है ।

सारशब्दोदयो येषां , जातो वै स्फूर्तिकर्षकः ।
तद्विमान समारूढाः , सर्वदिक्षु प्रयान्ति ते ॥

१५.*शब्दकेवलताप्राप्तियोग* :– पूर्वोक्त युक्ति से जब शब्द में मिली हुई सुरति की लेश मात्र भी प्रतीति न हो अर्थात् शब्द में सुरति पूरी तरह विलीन हो जाय उस दशा का नाम *शब्द–केवलता* है । साधक की यह दशा अनीर्वचनीय , अकह है । इस अवस्था में साधक को परमसुख की अनुभूति होती है , आत्मसाक्षात्कार के बिल्कुल ही समीप पहुँच जाता है ।

द्विसोपानपरं ज्ञेयं , तस्य मोक्षस्य मन्दिरम् ।
साधकेन तु विज्ञेय–मासन्नमात्मदर्शनम् ॥

१६. *शब्दविलीनीकरणयोग* :– शब्द केवलता की प्राप्ति हो जाने पर सद्गुरु साधक को ज्ञानयोग द्वारा शब्द का भी लय कर देने की युक्ति बताते हैं । शब्द तत्त्व गुप्त होना , प्रकट होना , घटना–बढ़ना आदि बातों से युक्त रहता है अतः निस्तत्त्वपदरूप नहीं है । सारशब्द साधनरूप है , साध्य नहीं । साध्य तो चे–तनात्मा ही है जो अजर–अमर है । "*तत्त्व में निःतत्त्व दरशे, आवागवन निवारिये (दयासागर)* " ।

शब्दालम्बाः सुखेनेह , निस्तत्त्वं चेतनं पदम् ।
प्राप्नुवन्ति ध्रुवं लक्ष्यं , सहजेन समाधिना ॥

१७. *निस्तत्त्वप्राप्तियोग* :– एक चैतन्य शक्ति को छोड़कर माया और माया से उत्पन्न सभी कृत्रिम पदार्थ पञ्च–तत्त्वों की रचना है । माया विरचित समग्र पदार्थों का सदैव परिणाम होता रहता है । यही कारण है कि एक समय उनका नाश भी हो जाता है । तत्त्वों से जो परे है वह निस्तत्त्व है । यही चैतन्य , सनातन , अजर–अमर और अविनाशी है । जो साधक निस्तत्त्व पद को प्राप्त कर लेता है वह दिव्य–अदिव्य तत्त्वों की रचना से पार हो जाता है ।

दिव्यादिव्यप्रभेदेन , रचना तु द्विविधा मता ।
निस्तत्त्वपदमासीनो , रचनाद्वयनिर्गतः ॥

१८. *मोक्षप्राप्तियोग* :– सँसार तभी तक है जब तक मन की तरङ्गें हैं, ये तरङ्गें जब आत्मसागर में लीन हो जाती हैं तब जीव मुक्तावस्था को प्राप्त हो जाता है । सुरति जब "*सत्* " शब्द का अवलम्बन कर आत्मतत्त्व में विलीन हो जाती है तो साधक जीते–जी ही मुक्तदशा का अनुभव कर लेता है । श्रद्धावान् साधक ,सद्गुरु की शरण में इस महान् साधना–क्रम को सम्पन्न कर अपने जीवन का परम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त कर लेता है । जैसे स्वाति–नक्षत्र में वर्षा की जो बूँद सीप के मुख में प्रविष्ट हो गया वह मोती बन जाता है , उसे पुनः आवागवन –(वाष्प, बादल, वर्षा) नहीं होता ।

यदा सुरतिशुक्तिस्तु , शब्दं स्वातिजलं पिबेत् ।
सोऽहंस्फूर्तिस्तदामुक्ता , भवेत्संसृतिजालतः ॥
प्रकाशमणिगीतेयं , गेहे गेहे प्रकीर्तिता ।
कुरुताज्ञन कल्याणं , याव"न्द्रदिवाकरौ ॥ ■

साखी

बन्दौं सत्य कबीर को, चरण कमल शिर नाय ।
जासु ज्ञान रवि कर निकर, भ्रम तम देत नशाय ॥१॥
पूजा गुरु की कीजिये, सब पूजा जेहि माहिं ।
जो जल सींचे मूल तरु, शाखा पत्र अघाहिं ॥२॥

भजन १

ध्याइये गुरु पद सुखदायक ।।टेक।।
विघनहरण मुदकरण सुमँगल,
ऋद्धि-सिद्धि वरदेश विनायक ॥१॥
नाम लेत सब पाप प्रनाशत,
बहुजन्मन कृत मनवचकायक ॥२॥
करुणासिन्धु कृपालु दयानिधि,
शरणागतवत्सल सब लायक ॥३॥
तारण-तरण भक्त भव-भञ्जन,
अधम-उधारण सन्त सहायक ॥४॥
धर्म्मदास इति वदत विनयकरि,
सत्यकबीर मोरे पितु-मायक ॥५॥

साखी

प्रेम-प्रेम सब कोई कहै, प्रेम न चिन्हैं कोय ।
जा मारग साहेब मिले, प्रेम कहावै सोय ॥१॥
कबीर भाठी प्रेम की, बहुतक बैठे आय ।
सिर सौंपे सो पीवसी, नातर पिया न जाय ॥२॥

भजन २

बोले काया में सुगनवाँ,बनके लहरी ।।टेक।।
पिजड़ा साढ़े तीन हाथ का, तामें सुगना बोले ।
कभी-कभी मस्ती में आकर, दिल का जौहर खोले ।
डोले सँझवा और बिहनवाँ बनके लहरी.....॥१॥
पाँच तत्त्व के पिंजड़ा वाके,तामें दश दरवाजा ।
मध्य सभा में लगा के आसन,बैठै बनके राजा ।
झूले प्रेम के झुलनवाँ बन के लहरी.....॥२॥
आपन सेवा के खातिर ओ, राखिन नव पटरानी ।
वहि रानिन से बात करतु है,आपहुँ भरे हुँकारी ।
माने ऊनहूँ के कहनवाँ बनके लहरी.....॥३॥
कहैं कबीर हो जा दिन सुगना,पिजड़े से उड़ि जैइहैं ।
सोना ऐसी जला के काया, अँसुवन से मुख धोइहैं ।
रोइहैं आपन और बेगनवाँ बनके लहरी.....॥४॥

साखी

कबीर गर्व न कीजिये, ऊँचा देखि आवास ।
काल परौ भुँई लेटना, ऊपर जमसी घास ॥१॥
कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय ।
यह पुर पट्टन यह गली, बहुरि न देखो आय ॥२॥

भजन ३

जगत चलि जाय यहाँ कोई न रहैया ।। टेक ।।
चले गये कुम्भ करण अरु रावण,
चले गये राम लखन चारों भइया ॥१॥
चले गये नन्द यशोमति मइया,
चले गये गोपी ग्वाल कन्हैया ॥२॥
उतपति परलय चारों युग बीते,
काल बली से कोई न बचैया ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो !
सत्यनाम एक होइहैं सहैया ॥४॥

श्लोक

नमः सद्गुरु देवाय, नमो मङ्गल रूपिणे ।
नमः सत्यस्वरूपाय, कबीराय नमो नमः ॥

भजन ४

सो सतगुरु मोही भावै संतो जो, आवागवन मिटावै ।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे ,अस उपदेश सुनावै ।।टेक।।
बिन हठ कर्म त्रिया सो न्यारा,सहज समाधि लगावै ।
द्वार न रोके पवन न रोके,ना अनहद उरझावै ॥१॥
ये मन जहाँ जाय तहाँ निर्भय, समता से ठहरावै ।
कर्म करै और रहे अकर्मी,ऐसी युक्ति बतावै ॥२॥
सदा आनन्द फन्द से न्यारा,भोग में योग सिखावै ।
तज धरती आकाश अधर में, प्रेम मड़ैया छावै ॥३॥
ज्ञान सरोवर शून्य शिला पर,आसन अचल जमावै ।
कहैं कबीर सतगुरु सोई साँचा, घट में अलख लखावै ॥४॥

साखी

गुरु बिन ज्ञान न ऊपजै, गुरु बिन मिले न भेव ।
गुरु बिन संशय ना मिटै, जय जय जय गुरुदेव॥

भजन ५

वन्दनीये गुरुदेव तुमको,वन्दनीये गुरुदेव ।।टेक।।
काल-जाल के फँन्दा भारी,परख लखायो भेव ॥१॥
वेद शास्त्र सब खोजत हारे,मरम न जाने कोय ॥२॥
गुरु समान नहिं कोऊ दाता, ताकी करिहौं सेव ॥३॥
साहेब कबीर अभय पद दाता,पूरण परख समेव ॥४॥

साखी

गुरु पारस गुरु परस हैं, चन्दन वास सुवास ।
सतगुरु पारस जीव को, दीन्हा मुक्ति निवास ॥

भजन ६

सद्गुरु(गुरुजी)मिले जिलावन हार,
सुरतिया झूल रही है ।।टेक।।

गले मिल सखियाँ मँगल गावैं, कर कर के सिंगार ।।१।।
नाम हिण्डोला पड़ा गगन में, झुले सुरतिया डार ।।२।।
गगन मण्डल में सेज पिया की, बैठे लीला-धार ।।३।।
श्री सतगुरु की खोज लगाओ, पहुँचो तो खुले द्वार ।।४।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो !अब की न जम की बार ।।५।।

साखी
आये हैं सो जायेंगे, राजा रँक फकीर ।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बाँधे जात जँजीर ।।

भजन ७
यह पिंजड़ा नहिं तेरा रे हँसा,यह पिंजड़ा नहिं तेरा ।।टेक।।
कंकड़ चुनि चुनि महल बनाया,लोग कहैं घर मेरा ।
ना घर तेरा ना घर मेरा,चिड़िया रैन बसेरा ।।१।।
दादा बाबा भाई भतीजा,कोई न चले संग तेरा ।
हाथी घोड़ा माल खजाना,पड़ा रहे धन ढेरा ।।२।।
मातु पिता स्वारथ के साथी, कहते मेरा मेरा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! एक दिन जंगल डेरा ।।३।।

साखी
तीन लोक है देह में, रोम-रोम में धाम ।
सतगुरु बिन नहिं पाइये, सत्य सार निज नाम ।।

भजन ८
हिरवा गवाँ के ससुरा , जालु बारि धनिया ।।टेक।।
कवन मँत्र ह कवन तँत्र ह, कवन भेद ह जनियाँ ।
का तोहरा सँग जाई ये गोरी, काह मूल निसनियाँ ।।१।।
ओऽहंग मँत्र ह सोऽहंग तँत्र ह, अलख भेद ह जनियाँ ।
शब्द इ तोहरा साथ में जाई, सतह मूल निसनियाँ ।।२।।
गिले दूध पर मक्खी बैठै, पाँव गइल लटकनियाँ ।
हाथ हिलावे पाँव डोलावे, समुझ-समुझ पछतनियाँ ।।३।।
काया गढ़ एक वृक्ष बा लागल, ओकर पात झुनझुनियाँ ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! त्रिकुटी में हमरो दुकनियाँ ।।४।।

साखी
माया दीपक नर पतँग, भ्रमि-भ्रमि माहिं पड़न्त ।
कोई एक गुरु ज्ञान ते, उबरे साधु सन्त।।

भजन ९
का नैना चमकावै ठगिनियाँ, का नैना चमकावै ।।टेक।।
कद्दू काट मृदँग बनाया, नींबू काट मँजीरा ।
पाँच तरोई मंगल गावैं, खीरा नाच दिखावै ।।१।।
रूपा पहिरि के रूप दिखवली, सोना पहिरि तरसावै ।
गले डाल मोतियन के माला, तीनों लोक भरमावै ।।२।।
भैंस पद्मिनी आशिक चूहा, मेढक ताल लगावै ।
चोला पहिरि के गदहा नाचे, ऊँट विष्णु पद गावै ।।३।।
आम डारि चढ़ि कछुआ तोड़े, गिलहरि चुनि-चुनि लावै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! बगुला भोग लगावै ।।४।।

साखी
सत्य नाम को खोजहु, जाते अग्नि बुझाय ।
बिना नाम बाँचै नहीं, धर्मराय धरि खाय ।।

भजन १०
चादर हो गई बहुत पुरानी, अब सोच समझ अभिमानी ।।टेक।।
अजब जुलाहे चादर बीनी सूत करम की तानी ।
सुरति निरति को भरना दीनी, तब सबके मनमानी ।।१।
मैले दाग पड़े पापन के, विषयन में लिपटानी ।
ज्ञान के हाथों लाय के धोवो, सतसंगत के पानी ।।२।।
भई मैली और भींगी साड़ी, लोभ मोह में सानी ।
ऐसे ही ओढ़त उमर गँवाई, भली बुरी नहीं जानी ।।३।।
शँका मति जानु जिय अपने, है ये वस्तु विरानी ।
कहैं कबीर ये राख यतन से, फिर नहिं हाथन आनी ।।४।।

साखी
कबीर सूता क्या करे, काहे न देखे जागि ।
जाके संग ते बिछुड़े, ताही के संग लागि ।।

भजन ११
करो रे बन्दे ! वा दिन के तदबीर ।।टेक।।
जब यमराजा आन पड़ेंगे, तनिक न धरिहैं धीर ।
मार के सोंटा प्राण निकालैं, नैनन भरिहैं नीर ।।१।।
भवसागर एक अगम पन्थ है, जल बाढ़े गम्भीर ।
नाव न बेड़ा भीड़ घनेरा, खेवट ह्वैंगे तीर ।।२।।
घर तिरिया अरधँगी बैठी, मात-पिता सुखबीर ।
पाल नाव की कौन चलावे, सँग न जात शरीर ।।३।।
लैके बोरे नरक कुण्ड में, व्याकुल होत शरीर ।
कहैं कबीर नर ! अब की चेतो, माफ होय तकदीर।।४।।

साखी
आगि जो लगी समुद्र में, धुआँ न परगट होय ।
की जाने जो जरि मुवा, कि जाकी लाई होय ।।

भजन १२
नैहरवा हमका न भावै ।।टेक।।
साईं की नगरी परम अति सुन्दर, जहाँ कोई जावे न आवै ।
चाँद सूरज जहाँ पवन न पानी, को संदेश पहुँचावै ।
दरद यह साईं को सुनावै, नैहरवा.....।।१।।
आगे चलौं पन्थ नहिं सूझे, पीछे दोष लगावै ।
केहि विधि ससुरे जाऊँ मोरि सजनी,विरहा जो जरावै ।

विषय रस नाच नचावै, नैहरवा.....॥२॥
बिन सतगुरु अपनों नहिं कोई, जो यह राह बतावै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! सपने न प्रीतम पावै ।
तपन यह जिया की बुझावै, नैहरवा.....॥३॥

साखी

जब तू आया जगत में, जगत हँसे तू रोय ।
ऐसी करनी कर चलो, तू हँसे जग रोय ॥

भजन १३

छाँड़ि चले बनजारा, ठठरी छाँड़ि चले बनजारा ।।टेक।।
इस ठठरी बीच सात समँदर, कोई मीठा कोई खारा ।
इस ठठरी बीच चाँद सूर्य है, यही बीच नव लख तारा ॥१॥
इस ठठरी बीच पाँच रतन है, कोई कोई परखनहारा ।
गिर पड़े ठठरी डिग पड़े मँदिर, जामे चेतना गारा ॥२॥
इस ठठरी बीच नव दरवाजा, दशवाँ गुपुत विचारा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! सद्गुरु शबद उबारा॥३॥

साखी

घट घट मेरा साईयाँ, सूनी सेज न कोय ।
बलिहारी घट तासु की, जा घट परगट होय ॥

भजन १४

हर में हरि को देखा साधो ! हर में हरि को देखा ॥ टेक॥
आप माल औ आप खजाना, आपे खरचन वाला ।
आप गली–गली भिक्षा माँगे, लिये हाथ में प्याला ॥१॥
आपहिं मदिरा आपहिं भाठी, आप चुवावन हारा ।
आप सुराही आपे प्याला, आप फिरे मतवाला ॥२॥
आपहिं नैना आपहिं सैना, आपहिं कजरा काला ।
आप गोद में आप खेलावै, आपै मोहन वाला ॥३॥
ठाकुर द्वारे ब्राह्मण बैठा, मक्का मे दरवेशा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! हरि जैसे को तैसा ॥४॥

साखी

कबीर इस सँसार में, कोई काहु का नाहिं ।
घर की नारी को कहे, तन की नारी नाहिं ॥

भजन १५

क्या देखे दर्पण में मुखड़ा, तेरे दया धरम नहिं तन में ।।टेक॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, उतरन चाहे पल में ।
प्रेम की नैय्या पार उतर गये, पापी बूड़े जल में ॥१॥
दर्पण देखत मोछ मरोड़त, तेल चुवत जुलफन में ।
एक दिन ऐसा आन पड़ेगा, कागा नोचत वन में ॥२॥
अमवा की डारि कोयलिया बोले, सुवना बोले वन में ।
घरबारी घर ही में राजी, फक्कड़ राजी वन में ॥३॥
सुन्दर तिरिया बीड़ा लावै, सेवा चाहे अँग में ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! कोई न जैहैं सँग में ॥४॥

साखी

सुख में सुमिरण ना किया, दुःख में करता याद ।
कहैं कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद ।

भजन १६

नाम न आवत हिये जिनके,नाम न आवत हिये ।।टेक॥
काह भये नर काशी बसे रे, का गंगा जल पीये ॥१॥
काह भये नर जटा रे बढ़ाये, का गुदड़ी के सीये ॥२॥
काह भये नर कण्ठी के बाँधे, काह तिलक के दीये ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! नाहक ऐसे जीये ॥४॥

साखी

मानुष तेरा गुण बड़ा, माँस न आवै काज ।
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज ॥

भजन १७

बनै जो कुछ धरम कर ले, यही एक साथ जायेगा ।
गया अवसर न फिर तेरे, ये हरगिज हाथ आयेगा ।।टेक॥
दिवाना बन के दुनियाँ में, समय अनमोल खोता है ।
दिये लाखों की दौलत भी, न पल रहने तू पावेगा ॥१॥
धरी रह जायेगी तेरी, अकड़ सारी ठिकाने पर ।
जब आके यम जकड़ गर्दन, पकड़ कर धर दबायेगा ॥२॥
कुटुम्ब परिवार सुत सोई, सहायक होगा न कोई ।
तेरे पापों की गठरी खुद, तुही शिर पर उठावेगा ॥३॥
गर्भ में था कहा तूने, न भूलूँगा प्रभु तुझको ।
भला तू जायकर अपना, उसे क्या मुहँ दिखावेगा ॥४॥
तुझे तो घर से जँगल में, तेरा ही खुद बखुद बेटा ।
सुलाके लकड़ियों के ढेर, में तुझको जलावेगा ॥५॥
कहैं कबीर समुझाई, तू कहना मान ले भाई ।
नहीं तो अपनी ठकुराई, वृथा सारी गमावेगा ॥६॥

साखी

माली आवत देखि के, कलियन करीं पुकार ।
फूले – फूले चुन लिये, काल्ह हमारी बार ॥

भजन १८

रे मन ! फूला–फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे ।।टेक॥
माता कहै यह पुत्र हमारा, बहिन कहै वीर मेरा ।
कहै भाई यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा ॥१॥
पेट पकड़ि के माता रोवै, बाँह पकड़ि के भाई ।
लपटि–झपटि के तिरिया रोवै, हँस अकेला जाई ॥२॥
जब लगि जीवै माता रोवै, बहिन रोवै दसमासा ।

तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घरबासा ।।३।।
चार गजी चरगजी मँगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारों कोने आग लगा दी, फूँक दिया जस होरी ।।४।।
हाड़ जरै जस बन की लकड़ी, केश जरै जस घासा ।
सोना ऐसी काया जरि गई, कोई न आवै पासा ।।५।।
घर की तिरिया रोवन लागी, ढूँढ फिरी चहुँपासा ।
कहँहि कबीर सुनो भाई साधो ! छाड़ो जग की आशा ।।६।।

साखी

कबीर सब जग निरधना, धनवन्ता नहिं कोय ।
धनवन्ता सोई जानिये, सत्यनाम धन होय ।।

भजन १९

भजन बिनु बावरे, तूने हीरा जनम गँवाया ।।टेक।।
कभी न आये संत शरण में, ना तो हरि गुण गाया ।
बहि बहि मरा खाय नित सोया, ऐसे ही जनम गँवाया ।।१।।
यह सँसार हाट बनिया का, सब जग सौदा लाया ।
चतुर माल चौगुना कीन्हा, मूरख मूल गँवाया ।।२।।
यह सँसार फूल सेमर का, शोभा देख लुभाया ।
मारत चोंच निकस गई रूई, सिर धुनि-धुनि पछताया ।।३।।
यह सँसार माया के लोभी, ऊँचा महल बनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! हाँथ कछु नहिं आया ।।४।।

साखी

सुख का सागर शील है, कोई न पावै थाह ।
शब्द बिना साधू नहीं, द्रव्य बिना नहिं शाह ।।

भजन २०

जग से नजरिया ना फेरो हो, मोरे सुरति सोहागिन ।।टेक।।
ये जग चार दिनन का मेला हो, फिर नहीं हाट बजरिया हो ।।१।।
ये जग धँधा के और नहीं हैं, बीत गये हैं सारी उमरिया हो ।।२।।
यह जग झूठी है तन-धन छूटि है, छूटी महल अटरिया हो ।।३।।
हमरे साहेब के ऊँची महलिया हो, बीचवा में पड़ गई सागरिया हो ।।४।।
कहत कबीर जग आश को त्यागो, धरो सतनाम डगरिया हो ।।५।।

साखी

सरवर तरुवर सन्त जन, चौथा बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे, चारों धारी देह ।।१।।
सन्त मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दुःख होय ।
सेवा कीजै सन्त की, जन्म कृतारथ होय।।२।।

भजन २१

मैं तो उन सन्तों का दास, जिन्होंने मन मार लिया ।।टेक।।
मन मारा तन बस किया, सभी भर्म भये दूर ।
बाहर से कछु दीखत नाहीं,
उनके अन्दर बरसे नूर..जिन्होंने ।।१।।
आपा मार जगत में बैठे, नहीं किसी से काम ।
इनमें तो कछु अन्तर नाहीं,
उनको सन्त कहो चाहे राम..जिन्होंने ।।२।।
प्याला पी लिया नाम का, छोड़ जगत का मोह ।
हमको सतगुरु ऐसे मिल गये,
अपनी सहज मुक्ति गई होय..जिन्होंने ।।३।।
धर्मदास के सतगुरु स्वामी, दिया अमी-रस प्यार ।
एक बुन्द सागर में मिल गई,
उनका क्या करे यमराय..जिन्होंने ।।४।।
जय गुरुदेव जय जय गुरुदेव....(कीर्तन)

साखी

कहैं कबीर तजि भरम को, नन्हा ह्वै कर पीव ।
तजि अहँ गुरु चरण गहु, यम से बाँचै जीव ।।

भजन २२

बिना रे खेवैया नैया, कैसे लागे पार हो ।।टेक।।
कितने निगुरे खड़े किनारे, कितने खड़े मझधार हो ।
कितने निगुरे करम के चूके, बाँधे यम के द्वार हो ।।१।।
भवजल के सागर पावे, लहरवा मेरा यार हो ।
पिछला वादा सम्हालो यारो, लहर उठे विकराल हो ।।२।।
सन्तन जहाज यहाँ लादे, हँसन केरा भार हो ।
नाम फहरा बाँध के, नर उतरे भवपार हो ।।३।।
सन्तन के बोले बाणी, रहनी हो अपार हो ।
साहेब कबीर यह कहरवा गावैं, काया में करतार हो ।।४।।

साखी

पत्ता टूटा डाल से, ले गई पवन उड़ाय ।
अब के बिछुड़े ना मिलैं, दूर पड़ेंगे जाय ।।१।।
पेड़ कहतु है पात से, सुन पत्ते मेरी बात ।
दुनियाँ की यह रीति है, एक आवै एक जात ।।२।।

भजन २३

हँसा चले हैं सतलोक,जगत सपना भयो...साधो ।।
बन्द भये हैं दरबार, रूप नहीं रेखा हो ...साधो ।।टेक।।
पाँच तत्त्व कर पींजरा, तनिक नाहीं बिगड़ा हो...साधो ।
गृह है कुल परिवार, कौन रहा निकसा हो...साधो ।।१।।
रोवत उनकर नारि, नयन जल धारा हो...साधो ।
डूब गये हैं मेरो नाव, तू खेवनहारा हो ...साधो ।।२।।
मुख पर धरि दीन्ह आग, काट बहुवारा हो...साधो ।
पुत्र लिये हैं कर बाँस, शीश जाय मारा हो...साधो ।।३।।
सब जीवन कर मूल, ताहि नहिं जाना हो...साधो ।
कहैं कबीर पुकार, समुझ बेगाना हो...साधो ।।४।।

साखी

मन्दिर माँहि झलकती, दीवा कैसी ज्योति ।
हँस बटाऊ चलि गया, काढ़ी घर का छोति ॥

भजन २४

बँगला खूब बनाया बे, अन्दर नारायण सोया ।।टेक।।

इस बँगले का नव दरवाजा,बीच पवन का खम्भा ।
आवत-जावत कोई नहिं देखा, ये ही बड़ा अचम्भा..बँगला ।।१।।
पाँच तत्त्व की भीत बनाई, तीन गुणों का गारा ।
रोम की ओना चाल चलावे, चेतन करने हारा..बँगला ।।२।।
मन कहता है हाथी घोड़ा, ऊँट की पालकी होना ।
साहेब जी के दिल में है, नंगे पाँव से चलना..बँगला ।।३।।
पाँच पचीस से पत्रा बाँचे, मनवा थाल बजावे ।
सुरति निरति की मृदँग बजावे, राग छतीसों गावे..बँगला ।।४।।
मन कहता है दौलत करना, ऊँचे महल में सोना ।
साहेब जी के दिल में है, सत्यनाम तू जपना..बँगला ।।५।।
मन कहता है जोरू लड़का, बहुत रोज़ है जीना ।
साहेब जी के दिल में है, एक दिन मिट्टी मिलना..बँगला ।।६।।
अपरम्पार बड़ा ही यारो, सतगुरु भेद बतावैं ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! जिन्ह खोजै तिन्ह पावै..बँगला ।।७।।

साखी

कबीर मन्दिर लाख का, जड़िया हीरा लाल ।
दिवस चारि का पेखना, विनसि जायेगा काल ॥

भजन २५

जीवड़ा दो दिन का मेहमान, अब तुम कब सुमिरोगे राम ।।टेक।।

गर्भापन में हाथ जुड़ाया, निकल हुआ बेइमान....जीवड़ा ।।१।।
बालापन में खेल गुमाया, तरुणापन में काम....जीवड़ा ।।२।।
बुड्ढेपन में काँपन लागा, निकल गया अरमान...जीवड़ा ।।३।।
झूठी काया झूठी माया, आखिर मौत निदान.....जीवड़ा ।।४।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! यही घोड़ मैदान...जीवड़ा ।।५।।

साखी

कबीर वा दिन याद कर, पग ऊपर तल शीश ।
मृतु मण्डल में आय के, बिसरि गया जगदीश ॥

भजन २६

जे तन लग गई सोई जाने, दूजा क्या जाने मेरे भाई ।।टेक।।

रास्ता में एक घायल घूमे, घाव नहीं रे भाई ।
सतगुरु बाण विरहा का मारा, साल रहा तन माहीं ।।१।।
धन्ना भक्त रैदास नामदेव, लग गई मीरा बाई ।
बलख बुखार को ऐसी लग गई, छोड़ गया बादशाही ।।२।।
रँका लग गई बँका लग गई, लग गई सेना नाई ।
पीपा नाद भरा के लग गई, कूद पड़ा जल माहीं ।।३।।
साहेब कबीरा मन के धीरा, जिन ये लगन लगाई ।
जिनकी चोट निशाने लग गई, हते चाकरी पाई ।।४।।

साखी

सतयुग त्रेता द्वापर, यह कलियुग अनुमान ।
सार-शब्द एक साँच है, और झूठा सब ज्ञान ॥

भजन २७

कोई सुनता है गुरु ज्ञानी, गगन में आवाज हो रही झीनी ।।टेक।।

पहले होता नाद बिन्दु से, फेर जमाया पानी ।
सब घट पूरन पूर रहा है, आदि पुरुष निरवाणी ।।१।।
जो तन पाया पता लिखाया, तृष्णा नहीं भुलानी ।
अमृत रस छोड़ विषय रस चाखा,उलटी फाँस फँसानी ।।२।।
ओऽहँ सोऽहँ बाजा बाजे, त्रिकुटी शून्य समानी ।
ईंगला पिंगला सुषमन शोधो, शून्य ध्वजा फहरानी ।।३।।
दीद बन्दीद हम नजरों से देखा, अजरा अमर निशानी ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! यही आदि की बानी ।।४।।

साखी

बलिहारी गुरु आपकी, घड़ी घड़ी सौ बार ।
मानुष ते देवता किया, करत न लागी बार ॥

भजन २८

सद्गुरु फकत जगत में, दुःख से छुड़ाने वाले ।
भवसिन्धु में कुटुम्ब के, सब हैं डुबाने वाले ।।टेक।।

माता पिता तुम्हारे, तिरिया औ सुत विचारे ।
स्वारथ के अपने सारे, नाता लगाने वाले ।।१।।
अब तो सगे घनेरे, कहता है जिनको मेरे ।
आखिर को कोई तेरे, नहिं काम आने वाले ।।२।।
यम से पड़ेगा पाले, मुसकें जकड़ के ताने ।
कोई न उस ठिकाने, होंगे बचाने वाले ।।३।।
पाके मनुष्य तन को, करले पवित्र मन को ।
फूले न देख धन को, दौलत कमाने वाले ।।४।।
सुनले ये बात नीकी, प्यारे कबीर जी की ।
भक्ति से उस धनी की, ऐ मुँह छिपाने वाले ।।५।।

साखी

माया सम नहीं मोहिनी, मन समान नहिं चोर ।
हरिजन सम नहिं पारखी, कोई न दीखै और ॥

भजन २९

प्यारे प्रपञ्च में तुम, दिन रात क्यों गुजारो ?
मानुष का तन ये पाके, कुछ तो जरा विचारो ।।टेक।।

दो दिन का ये बसेरा, कहते हो मेरा मेरा ।
सब छोड़ अपना डेरा, खाली गये हजारों ।।१।।

आशा की पाग पागे, तृष्णा के पीछे लागे ।
फिरते हो क्यों अभागे, सन्तोष दिल में धारो ।।२।।
देवेगा सोई पावे , और कुछ न काम आवे ।
एक धर्म्म साथ जावे, यह बात मत बिसारो ।।३।।
कहते कबीर ज्ञानी, सँसार है ये फानी ।
तज अपनी सब नादानी, ममता औ मद को मारो ।।४।।

साखी

कबीर सोई शूरमा, मनसो माँड़ै जूझ ।
पाँचो इन्द्री पकड़ि के, दूर करे सब दूझ ।।

भजन ३०

आना कबीर पँथ में, खाला का घर नहीं ।
आते हैं शूर नर जिन्हें, दुनिया का डर नहीं ।।टेक।।
चोरी औ झूठ त्याग कर, सच्चे सदा रहें ।
डालें पराई नारि पर, हरगिज नज़र नहीं ।।१।।
उपदेश तो करते हैं, सभी पाप न करना ।
सुनते हैं अपने कान, आप खुद मगर नहीं ।।२।।
बालक जो आयकर, कहै वाज़िब बात ।
उसकी भी मानने में, उनको उज़र नहीं ।।३।।
रुतबा औ माल धन पै, जो करता है कुछ गरूर ।
उसका तो इस धरम में, जरा भर गुजर नहीं ।।४।।
कहते हैं धरमदास, साफ-साफ ये सबसे ।
मुक्ति का और ठौर, कहीं सर बसर नहीं ।।५।।

साखी

तन को जोगी सब करे, मन को करे ना कोय ।
सहजे सब सिद्धि पाईये, जो मन जोगी होय ।।

भजन ३१

साधू का वेष धर के, ज्ञानी जो तुम कहावो ।
अतिशय उदार अपना, अन्तःकरण बनावो ।।टेक।।
कर्त्तव्य अपना पालो, यम नियम को सँभालो ।
दुरमति को दूर टालो, सुकृत सदा कमाओ ।।१।।
एक सत्यव्रत धारी, कामादि रिपु निवारी ।
बनि शुद्ध ब्रह्मचारी, विषयों से मन हटावो ।।२।।
पैसा न पास जोड़ो, आशा जगत की छोड़ो ।
तृष्णा से मुख को मोड़ो, माया में मत लुभावो ।।३।।
निज कर्म्म की कमाई, यह तिल घटे न राई ।
सुख दुःख को पाय भाई, मत धैर्य्य को डिगावो ।।४।।
उपकार को सभी के, करलो विचार जी के ।
भूलकर भी न किसी के, दिल को कभी दुखावो ।।५।।
विष का स्वाद चाखो, मुख से न झूठ भाखो ।
जीवों पे दया राखो, उपदेश सद्दृढ़ावो ।।६।।
फिरते हो क्यों भुलाने, बिन गुरु कबीर जाने ।
पढ़-पढ़ के पोथीपाने, बकवाद मत बढ़ावो ।।७।।

साखी

गोधन गजधन वाजिधन, और रतन धन खान ।
जब आवै सन्तोष धन, सब धन धूलि समान ।।

भजन ३२

नर तुम काहे को माया जोड़ी ।।टेक।।
कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, जोड़ी लाख करोड़ी ।
जब खरचन की बारी आई, रहिगै हाथ सिकोरी ।।१।।
हाथी लाये घोड़ा लाये, लाये सैन बटोरी ।
अन्त समय कोई काम न आवै, चढ़े काठ की घोड़ी ।।२।।
जाय उतारें गँगा घाट पर, कपड़ा लीन्हा छोड़ी ।
भाई बन्धु विमुख होइ बइठे, फूँकि दियो जस होरी ।।३।।
यम के दूत दीहैं दुःख भारी, हाथ पैर सब तोरी ।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो ! डारि नरक में बोड़ी ।।४।।

साखी

कबीर सँगति साधु की, ज्यों गन्धी का वास ।
जो कुछ गन्धी दे नहीं, तो भी वास सुवास ।।१।।
मथुरा काशी द्वारिका, हरिद्वार जगन्नाथ ।
साधु सँगति हरि भजन बिन, कछु न आवै हाथ ।।२।।

भजन ३३

सन्तन के संग लाग रे,तेरी अच्छी बनेगी ।।टेक।।
हँसन की गति हँस ही जाने,
क्या जानेगा कोई काग रे ।।१।।
संतन के संग पुण्य कमाई,
होय बड़ो तेरो भाग रे ।।२।।
ध्रुव की बनी प्रह्लाद की बन गई,
हरि सुमिरण वैराग रे ।।३।।
कहत कबीर (साहेब) सुनो भाई साधो !
राम भजन में लाग रे ।।४।।

साखी

जा घट प्रीति न प्रेम रस, पुनि रसना नहिं राम ।
ते नर पशु सँसार में, उपजि मरे बेकाम ।।

भजन ३४

भजो रे भइया राम गोविन्द हरि ।।टेक ।।
जप तप साधन कछु नहिं लागत,खरचत नाहिं गठरी ।।१।।
संतत सम्पत सुख के कारण, जासे धूल परी ।।२।।
कहत कबीर जा मुख राम नहिं, वो मुख धूल भरी ।।३।।

साखी

नाम लिया तिन सब लिया, सब शास्त्रन का भेद ।
बिना नाम नरके गये , पढ़ि गुनि चारों वेद ॥

भजन ३५

हे सद्गुरु कबीरं ! हरो काल पीरं ,
हे साहेब कबीरं ! हरो भक्त पीरं ।।टेक।।

आशा को गाड़े समुद्र तो हटा था,
जगन्नाथ मन्दिर उसी दिन बना था ।
लगी आग पण्डा का सब तन जला था,
महामन्त्र पण्डा ने यही जपा था..हे..।।१।।
गिरिनार की रानी को तक्षक डसा था,
न व्यापा गरल तन में अमृत भरा था ।
उसी हँस रानी को सँकट पड़ा था,
महामन्त्र रानी ने यही जपा था..हे..।।२।।
द्वापर में पाण्डवों ने भारत रचा था,
किया था यज्ञ भारी न पूरा हुआ था ।
आये सुदर्शन तो घण्टा बजा था,
महामन्त्र सुपत ने यही जपा था..हे..।।३।।
इब्राहिम अधम जो समझता खुदा था,
बन्धाये थे साधु तो चक्की पीसा था ।
जब आये सद्गुरु तो बन्धन कटा था,
महामन्त्र सन्तों ने यही जपा था..हे..।।४।।
शाह सिकन्दर ने कसनी लिया था,
दे बावन कसनी सर को नीचा किया था ।
कहैं धर्म्मदास हमने सद्गुरु किया था,
महामन्त्र धर्मनि ने यही जपा था..हे..।।५।।

साखी

कबीर सब घट आतमा, सिरजी सिरजन हार ।
राम कहै सो राम सम, रहता ब्रह्म विचार ॥

भजन ३६

कुछ लेना न देना मगन रहना ।।टेक।।

गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिया से मिले रहना ।।१।।
तेरा साहिब है तेरे में, अखियाँ खोल देखो नयना ।।२।।
पाँच तत्त्व का बना पूतला, जिसमें रहे मेरी मैना ।।३।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! गुरु के चरण में लिपट रहना ।।४।।

साखी

मन मक्का दिल द्वारिका, काया काशी जान ।
दश द्वारे का देहरा , तामें ज्योति पिछान ॥

भजन ३७

पानी में मीन पियासी, मोहिं सुनि-सुनि आवत हाँसी ।।टेक।।
आतम ज्ञान बिना नर भटके, कोई मथुरा कोई काशी ।
जैसे मृगा नाभि कस्तूरी, बन-बन फिरत उदासी ।।१।।
जल बिच कमल कमल बिच कलियाँ, तापर भँवर निवासी ।
सो मन बस त्रैलोक्य भयो है, यती सती सन्यासी ।।२।।
जाको ध्यान धरे विधि हरि हर, मुनि जन सहस अठासी ।
सो तेरे घट माहिं विराजे, परम पुरुष अविनाशी ।।३।।
है हाजिर तेहि दूर बतावै, दूर की बात निरासी ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! गुरु बिन भरम न जासी ।।४।।

साखी

प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय विदेश ।
तन में मन में नैन में, ताको कहाँ सन्देश ॥

भजन ३८

घूँघट के पट खोल रे, तोको पिया मिलेंगे ।।टेक।।

घट-घट में वह साँई रमता, कटुक वचन मत बोल रे ।।१।।
धन यौवन का गर्व न कीजै, झूठा पचरँग चोल रे ।।२।।
शून्य महल में दियना बारि ले, आसन से मत डोल रे ।।३।।
योग युगति से रँग महल में, पिया पायो अनमोल रे ।।४।।
कहैं कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ।।५।।

साखी

मन जो गया तो जान दे, दृढ़ करि राख शरीर ।
बिना चढ़ाय कमान के, कैसे लागे तीर ॥

भजन ३९

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ।।टेक।।

हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार-बार वाको क्यों खोले ।
हलकी थी तब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले ।।१।।
सुरति कलारी भई मतवारी, मदवा पी गई बिन तोले ।
हँसा पाये मान सरोवर, ताल तलैया क्यों डोले ।।२।।
तेरा साहेब है घट माहिं, बाहर नैना क्यों खोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! साहिब मिल गये तिल ओले ।।३।।

साखी

जिन खोजा तिन पाईया, गहरे पानी पैठ ।
मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ ॥

भजन ४०

ढूँढ-ढूँढ मैं हारा सद्गुरु, मिला न दरश तुम्हारा ।।टेक।।

रामेश्वर जगदीश द्वारिका, बद्रीनाथ केदारा ।
काशी मथुरा और अयोध्या, ढूँढा गिरि गिरनारा ।।१।।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, भटका सब सँसारा ।
अड़सठ तीरथ में फिर आया, दरश हेतु बहुबारा ।।२।।
जप तप व्रत उपवास किये बहु, संयम नियम आचारा ।

भई न भेंट नाथ स्वप्नेहुमा , अस कहाँ भाग्य हमारा ॥३॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा, व्याकुल है तन सारा ।
अब तो धर्म्मदास को कीजै, दर्शन दे भवपारा ॥४॥

साखी
साहेब तेरी साहेबी, सब घट रही समाय ।
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय ॥१॥
कस्तुरी कुण्डलि बसै, मृग ढूँढै वन माहिं ।
वैसे घट-घट राम है, दुनिया देखत नाहिं ॥२॥

भजन ४१
मोको कहाँ ढूँढे बन्दे मैं तो तेरे पास में ।।टेक॥
ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में ।
ना मन्दिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलास में ॥१॥
ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में ।
ना मैं क्रिया कर्म में रहता, नहीं योग सन्यास में ॥२॥
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में, ना ब्रह्माण्ड आकाश में ।
ना मैं भ्रकुटी भँवर गुफा में, सब श्वासन की श्वास में ॥३॥
खोजी होय तुरत मिल जाऊँ, एक पल की तलाश में ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! मैं तो हूँ विश्वास में ॥४॥

साखी
जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौर ।
सहजै हीरा नीपजै, जो मन आवै ठौर ॥२॥

भजन ४२
मोरा हीरा हिराय गयो कचरे मा ।।टेक॥
कोई पूर्व कोई पश्चिम बतावै, कोई पानी कोई पथरे मा ॥१॥
पण्डित वेद पुराण बतावैं, उरझ रहे जग झगरे मा ॥२॥
पाँच पचीस तीन के भीतर, लागि रहे बहु फिकरे मा ॥३॥
सुर नर मुनि यति पीर औलिया, भूल भुलाय सब नखरे मा ॥४॥
कहैं कबीर परख जिन पाया, बाँध लिया हिया अँचरे मा ॥५॥

भजन ४३
सत्यपुरुष को भोग लागे, शब्द अनाहद घण्टा बाजे हो ।।टेक॥
प्रेम सुरति से बनी रसोई, अमृत भोजन पारस होई हो ॥१॥
कञ्चन झारी सुकृत थारी, जेवन बैठे साहेब सिरजनहार हो ॥२॥
जेवहिं साहेब सन्त सब संगा,
गावहिं दास सुख परमआनन्दा हो ॥३॥
जब से काल भयो है अधीना, तब से हँस भयो परवीना हो ॥४॥
पाये परसाद जल अचवन कीन्हा,
महा प्रसाद दास को दीन्हा हो ॥५॥
कहैं कबीर पूरण भयो भाग,
जब सतगुरु मस्तक दियो हाथ हो ॥६॥

साखी
एक शब्द सुख खानि है, एक शब्द दुख राशि ।
एक शब्द बन्धन कटे, एक शब्द गल फाँसि ॥

भजन ४४
साहेब शब्द गहे कोई शूरा ।।टेक॥
तन-मन त्यागे पीठ न लागे, करी चाकरी पूरा ।
लाज धर्म तेरी साहेब रखिहैं, हिम्मत करो जरूरा ॥१॥
आशा तृष्णा कनक कामिनी, मोह जहर का कूरा ।
शूरा होय लड़े रण भीतर, भागे कादर कूरा ॥२॥
साहेब का परवाना आया, चलना नैन हजूरा ।
ब्रह्मा विष्णु शम्भु सनकादिक, जेहि घर लगे मजूरा ॥३॥
दुनियाँ में बहु सन्त-पन्थ है, कोई झूठा कोई पूरा ।
पीरन के सब पीर कहाये, गुरु कबीर मन्शूरा ॥४॥
खान-पान सब निर्मल करले, छोड़ो भाँग धतूरा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ! मिले मुक्ति भरपूरा ॥५॥

साखी
बन्दे तू कर बन्दगी, तो पावे दीदार ।
अवसर मानुष जन्म का, बहुरि न बारम्बार ॥

भजन ४५
साहेब ऐसो दिन कब अइहैं ।
सत्यनाम को छाँड़ि पतित मन, मेरो अन्ते न जइहैं ।।टेक॥
उलझन झँझट सकल नशैइहैं, चिन्ता चिता बुझैइहैं ।
होय निरद्वन्द्व चित्त केन्द्रित ह्वै, सत्यनाम गुण गैइहैं ॥१॥
मधु मिश्री से अधिक मधुरता, सत्यनाम में पइहैं ।
पल-पल पी-पी रामनाम रस, कबहुँ नाहिं अघैइहैं ॥२॥
जो बालक 'माँ ' ललकि पुकारे, यों कहि राम बुलैइहैं ।
उछलि गोद में लिपटि गले सों, मोद अलौकिक पइहैं ॥३॥
नैन निरख नीर गद-गद उर, तन पुलकित ह्वै जैइहैं ।
नाम लेत ना यहिं रहि जैइहैं, सारा जगत हेरैइहैं ॥४॥
सुत वनिता धन-धाम बड़ाई, इन महँ नाहिं भुलैइहैं ।
सत्यनाम के आगे सहजहिं, सब फीके हो जैइहैं ॥५॥
सद्गुरु साहेब ये जीवन में, दिन वैसो क्या अइहैं ?
नाम सुधा सागर में साहिब, मन गागर हो जैइहैं ॥६॥

साखी
चकवी बिछुड़ी रैन की, आय मिले परभात ।
जो जन बिछुड़े नाम सो, दिवस मिले नहिं रात ॥

भजन ४६
यहो मोरे ब्याह करैल हो बाबा, अजर-अमर घर नाम हो ।
अवरन वरन रूप नहीं मूर्ती, गुप्त प्रकट एक ध्यान हो ।।टेक ॥

अजर–अमर मोरे सासुर हो बाबा, चन्द्र सूरज की बाजी हो ।
आठ पहर जहाँ नौबत बाजे, सद्गुरु नाम निशान हो ॥१॥
ज्ञान विमल के चुनरी हो बाबा, ध्यान घूँघट मुख मोड़ हो ।
मै पति प्रियतम को रहुँ निरखौं, सुरति–निरति एक ठाँव हो ॥२॥
नहिं कछु मोरे भोजन बाबा, अजपा के जलपान हो ।
मनवा ही आरसी हो बाबा, अद्भुत रूप अपार हो ॥३॥
नहीं हमरो घर देवर बाबा, नहिं घर ननदि दयाद हो ।
नहीं हमरो कोई बैरन बाबा, सासु भइल अवसान हो ॥४॥
भइल दया हम सासुर चलनी, कोई नहीं बरजनिहार हो ।
भाई भतीजा औ परिजन सब, छोड़ि चले परिवार हो ॥५॥
अबकी गवना बहुरि नहिं अवना, नहिं दीखत सँसार हो ।
साहेब कबीर गुरु मँगल गावें, रहब साहेब जी के पास हो ॥६॥

साखी
कबीर हरि के रूठते, गुरु के शरणे जाय ।
कहैं कबीर गुरु रूठते, हरि नहिं होत सहाय ॥

भजन ४७
मेरे सद्गुरु हैं रँगरेज, चुनरि मोरी रँग डारी ।।टेक।।
शब्द का कुण्ड नेह के जल में, प्रेम रँग दियो बोर ।
दुःखदायी रँग छुड़ाय के रे, खूब रँगी झकझोर ॥१॥
स्याही रँग छुड़ाय के रे, दियो मजीठो रँग ।
धोवे से छूटे नहीं रे , दिन–दिन होत सुरँग ॥२॥
सद्गुरु ने चुनरी रँगी रे, सद्गुरु चतुर सुजान ।
सब कुछ उन पर वार दूँ मैं, तन मन धन और प्राण ॥३॥
कहैं कबीर रँगरेजवा रे, मुझ पर भयो हैं दयाल ।
शीतल चुनरी ओढ़ि के मैं, भई हौं मगन निहाल ॥४॥

साखी
सुरति फँसी सँसार में, या से पड़ि गयो दूर ।
सुरति बाँधि स्थिर करे, तो आठों पहर हजूर ॥

भजन ४८
सुरति से देख ले वह देश, जहाँ ना पहुँचे सन्देश ।।टेक।।
देखत–देखत देखन लागे, मिट गये सकल अन्देश ।
ना वहाँ चन्दा ना वहाँ सूरज, नहीं पवन परवेश ॥१॥
ना वहाँ जाप ना वहाँ अजपा, नहीं अक्षर लवलेश ।
वहाँ के गये बहुरि नहिं आवे,ना कोई कहत सन्देश ॥२॥
गगन गुफा में अनहद गरजे, भेंट गया है नरेश ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! सतगुरु किया उपदेश ॥३॥

साखी
पानी से पैदा नहीं, श्वासा नाहिं शरीर ।
अन्न अहार करता नहीं, ताका नाम कबीर ॥

भजन ४९
काशी के लहरतालाब में, साहेबजी(कबीरजी)प्रकट भये हो ।
अहो साधो सखियन मँगल गाईलन,गाई के सुनावेलन हो ।।टेक।।
चाँदनी रात उजियरिया, भईल अँधियरिया हो । अहो साधो..
पापी रे पपीहा आधी रात को शब्द सुनावेला हो ॥१॥
पपीहा शब्द मोहे लगन, मन बैरागन हो । अहो साधो..
खोजत फिरौं मन आपन, दूसरा न जानेला हो ॥२॥
एक बन गइल दूसर बन गइल, तीसर बन हो । अहो साधो..
ऊभि–ऊभि आवल शरीर, नयन भरि जावेला हो ॥३॥
भवजल नदिया भयावन, नहीं कोई आपन हो । अहो साधो..
नहीं रे खेवट पतवार, कौन विधि उतरब हो ॥४॥
साधु–सन्त सोहर गावेलन, गाई के सुनावेलन हो । अहो साधो..
अजर–अमर घर जाव , परम पद पावब हो ॥५॥

साखी
श्वास श्वास में नाम लो, वृथा श्वास ना खोय ।
ना जाने येहि श्वास का, आवन होय न होय ॥

भजन ५०
नाम जपन क्यों छोड़ दिया ।।टेक।।
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥१॥
झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ॥२॥
कौड़ी को तो खूब सम्हाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ॥३॥
जेहि सुमिरण ते अति सुख पावो,
सो सुमिरण क्यों छोड़ दिया ॥४॥
"खालिस" इक भगवान भरोसे,
तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ॥५॥

साखी
जल में बसै कुमुदिनी, चन्दा बसै आकाश ।
जो है जाको भावता, सो ताही के पास ॥

भजन ५१
मोरे जियरा हो, सुख परम अनन्दा,
आज साहेब मोरे आवेंगे ।।टेक।।
सखि काही से आँगन लिपाऊँ,
काही से सखि हो चौका पुराऊँ ॥१॥
सखि आँगन चन्दन लिपाऊँ,
गजमोतियन से सखि चौका पुराऊँ ॥२॥
सखि काहे का डारों बैठना,
काहे का सखि चरणामृत लेहुँ ॥३॥
सखि तन–मन डारूँ बैठना,
चरनन का सखि चरणमृत लेहुँ ॥४॥
सखि आँगन बोयहुँ लायची,

मोरे फल से हो सुख अमरबेले ।।५।।
सखि ऊँचे पाल समुन्द्र का, तले बहे यमुना के नीर ।।६।।
सखि ऊँचे चढ़ि देखहुँ, मोरे साहेब का रथ-ठिका दूर ।।७।।
सखि सब वृन्दावन ढूँढिया, मोहे मिलिया हो त्रिकुटी के तार ।।८।।
सखि भक्ति हेतु के कारणे,
मोपे दया करि हो बन्दीछोड़ कबीर ।।९।।

साखी
कबीर गर्व न कीजिये, काल गहे हैं केश ।
ना जानो कित मारिहैं, क्या घर क्या परदेश ।।

भजन ५२
चलो-चलो हँसा वहि देश, जहाँ तेरो पिया बसे ।।टेक।।
नव दस मूल दसों दिशि खोले, सुरत गगन चढ़ावे ।।१।।
चढ़े अटारी सुरति सम्हाले, बहुरि न भवजल आवे ।।२।।
जगमग ज्योति अधर में झलके, झीनी राग सुनावे ।।३।।
मधुर-मधुर अनहद धुन बाजे, मेघ अमृत जल लावे ।।४।।
ठाढ़ि मुक्ति भरे जहाँ पानी, लक्ष्मी झाड़ू लावे ।।५।।
अष्टसिद्धि ठाढ़ी कर जोरे, ब्रह्मा वेद सुनावे ।।६।।
जग में गुरु बहुत कानफूँका, फाँसी लाय बचावे ।।७।।
कहैं कबीर वही गुरु पूरा, जो कन्त को आन मिलावे ।।८।।

साखी
पानी केरा बुलबुला, अस मानुष की जात ।
देखत ही छिप जायेंगे, ज्यों तारा परभात ।।

भजन ५३
सत्य के सिन्दुरवा रामा, आप सुकृत मोरे साहेब ।
किया हो मोरे रामा हो, शब्द स्वरुपी पिया पाइब केरी ।।टेक।।
सत्य के अटरिया रामा, लागे फुलवरिया हो ।
किया हो मोरे रामा हो,
चुनि-चुनि फुलवा सेजिया बिछावल केरी ।।१।।
भइले बियहवा रामा, मोरे प्रेम आनन्द भइले ।
किया हो मोरे रामा हो, छुट गइले दुःख दूर दिया केरी ।।२।।
साहेब कबीर गुरु, गइलें निर्गुणिया हो ।
किया हो मोरे रामा हो,
अब की गवना बहुरि नहिं आइब केरी ।।३।।

साखी
कहैं कबीर तूँ लूट ले, राम नाम भण्डार ।
काल कण्ठ को जब गहे, रोके दशहुँ द्वार ।।

भजन ५४
राम रस ऐसा है मेरे भाई, राम रस ऐसा है ।
जो कोई पीवे अमर हो जावे, राम रस ऐसा है ।।टेक।।
ऊँचा-ऊँचा सब कोई चले, नीचा ना चले कोई ।
नीचा-नीचा जो कोई चले, सबसे ऊँचा होय ।।१।।
मीठा-मीठा सब कोई पीवे, कड़ुवा ना पीवे कोई ।
कड़ुवा-कड़ुवा जो कोई पीवे, सबसे मीठा होय ।।२।।
ध्रुव ने पीया प्रह्लाद ने पीया, और पीया रविदासा ।
गुरु कबीर ने भर-भर पीया, और पीवन की आशा ।।३।।

साखी
हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक ।
ताके पटतर ना तुले, सन्तन किया विवेक ।।

भजन ५५
गुरु चरणन की धूल, मस्तक लागी रहे ।।टेक।।
जब यह धूल लगी मस्तक पर, द्विविधा हो गई दूर ।।१।।
इँगला-पिंगला सुषमणि नारी, सुरति पहुँचे पूर ।।२।।
यह सँसार विघ्न की घाटी,जो निकले सो शूर ।।३।।
राम भक्ति रामानन्द लाये, (गुरु) कबीर किये भरपूर ।।४।।

साखी
लेने को सत्यनाम है, देने को अन्नदान ।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान ।।

भजन ५६
सतनाम सुमर जग लड़ने दे ।।टेक।।
कोरा कागज काली स्याही, लिखत-पढ़त वाको पढ़ने दे ।।१।।
हाथी चलत है अपने मारग, कुतवा भूँके वाको भूँकने दे ।।२।।
देवी-देवा-भूत-भवानी, पत्थर पूजे वाको पूजने दे ।।३।।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो ! नरक पड़त वाको पड़ने दे ।।४।।

साखी
चहुँ दिशि ठाढ़े सूरमा, हाथ लिये तलवार ।
सबहिं यह तन देखता, काल ले गया मार ।।

भजन ५७
मेरे सैंया(पिया)निकसि गये, मैं ना लड़ी थी ।।टेक।।
मैं ना बोली मैं ना चाली, ओढ़ि चदरिया अकेली पड़ी थी ।।१।।
इस नगरी में दश दरवाजे,
ना जाने कौन सी खिड़की खुली थी ।।२।।
पाँच देवरनियाँ पचीस जेठनियाँ,
ना जाने इनमें से कौन लड़ी थी ।।३।।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधों !
इस ब्याही से कुमारी भली थी ।।४।।

साखी
एक शीश का मानवा, करता बहुतक हीस ।

लँकापति रावण गया, बीस भुजा दश शीश ॥

भजन ५८

करम गति टारे नाहिं टरी ।।टेक।।

मुनि वशिष्ठ से पण्डित ज्ञानी, शोध के लगन धरी ।
सीता हरण मरण दशरथ को, वन में विपति पड़ी ।।१।।
कहाँ वह फन्द कहाँ वह पारिधि, कहाँ वह मिरग चरी ।
सीता को हरि लै गयो रावण, सुवरण लँक जरी ।।२।।
नीच हाथ हरिचन्द बिकाने, बलि पाताल छरी ।
कोटि गाय नित दान करत नृप, गिरगिट योनि पड़ी ।।३।।
पाण्डव जिनके आप सारथी, तिनहुँ पे विपति पड़ी ।
दुर्योधन को गर्व मिटायो, यदुकुल नाश करी ।।४।।
राहु केतु अरु भानु चन्द्रमा, विधि सँयोग भरी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो ! होनी होके रही ।।५।।

साखी

सरगुन का सेवा करो, निरगुन का करो ज्ञान ।
निरगुन सरगुन के परे, तहाँ हमारा ध्यान।।

भजन ५९

उस दरजी का मरम न पाया,
जिन यह चोला अजब बनाया ।।टेक।।
पानी की सूई पवन का धागा,
साँई को सीवत नव मास लागा ।।१।।
पाँच तत्त्व की गुदड़ी बनाई,
चाँद सूरज दोऊ थिगड़ी लगाई ।।२।।
जतन-जतन करि मुकुट बनाया,
ता बिच हीरा लाल लगाया ।।३।।
आपहिं सीवै आप बनावै, प्राण पुरुष को लै पहिरावै ।।४।।
कहहिं कबीर सोई जन मेरा, जो चोले का करे निबेरा ।।५।।

साखी

माया माया सब कहै, माया लखे ना कोय ।
जो मन से ना ऊतरे, माया कहिये सोय ॥

भजन ६०

माया महा ठगिनी हम जानी ।
त्रिगुणी फाँस लिये कर डोले, बोले मधुरी वाणी ।।टेक।।

केशव के कमला होय बैठी, शिव के भवन भवानी ।
पण्डा के मूरति होय बैठी, तीरथ हूँ में पानी ।।१।।
योगी के योगनी होय बैठी, राजा के घर रानी ।
काहू के हीरा होय बैठी, काहू के कौड़ी कानी ।।२।।
भक्ता के भक्तिन होय बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्माणी ।
कहत कबीर सुनो हो सन्तो ! ई सब अकथ कहानी ।।३।।

The Temple of Life

by Jaiparamhans Jaggessur

Every one born in this Planet faces the duality logic. That is to say, joy and sorrow, love and hatred, life and death.…Satguru Kabir Saheb, through his teachings carries us further away from this "simple" reality. On the physical world, the above mentioned dualities may be differentiat ed; they may be sensed as opposites. However, on the spiritual level, we come to realise that we are all ONE and we create dualities. The Universe has abundant bliss which can be shared by all inhabitants of this Planet. By creating divisions, trying to be better than others Man has brought so much disorder in his life that to redress this confusion one has to delve deep within himself and meditate on the teachings of the Satguru.

To understand the non-dual or ONENESS of life, just ponder on the following:-

Sorrow is the absence of Joy. Do we want to push away Joy from our life?

Hatred is absence of love. Do we want to stop loving ourselves? Death is absence of life. After the body dies, the soul still lives; the soul never dies.

Life never ends. If we keep in mind how we are all inter-connected i.e. God, Man and the Universe, we shall no doubt understand that we are bound by our acts (karmas). It is so important that we "do" good work, we shall be rewarded. We are not here to judge, we are not here to choose the reward, we are not here to set the time to receive the reward. We just need to continue "doing" our karmas. We should not see/compare with others, justifying that we are better than others.

Bura jo dekhan mein chala, bura na miliya koi
Jo dil khoja aapna, mujhsa bura na koi

Like this Satguru Kabir Saheb has offered to Mankind unlimited teachings/guidance.

We are here to celebrate life, so let us not be influenced by all the negative and increasing currents of evil actions. Satguru Kabir Saheb has instructed us not to go far away in the search of God. No need to search in temples, on the Ganges, through pilgrimages etc.

Do not mistake Satguru Kabir Saheb to deviate from Mandirs, or places of worship. He wanted to tell us that we can go to mandirs, to places of worship, nevertheless, we have to meditate on our inner self which is connected to the supreme (Paramatma). Going to places of worship but practising evil deeds does not bring us close to God. So, let us all celebrate life and meditate on the Satya Naam. ■

sākhī

bandaun satya kabīra ko, caraṇa kamala śira nāya |
jāsu gyāna ravi kara nikara, bhrama tama deta naśāya ||1||
pūjā guru kī kijiye, saba pūjā jehi mānhin |
jo jala sīnce mūla taru, śākhā patra aghāhin ||2||

bhajana 1

dhyāīye guru pada sukhadāyaka ||ṭeka||

vighanaharaṇa mudakaraṇa sumangala,
hṛdhi-sidhi varadeśa vināyaka ||1||
nāma leta saba pāpa pranāśata,
bahujanmana kṛta manavacakāyaka ||2||
karuṇāsindhu kṛpālu dayānidhi,
śaraṇāgatavatsala saba lāyaka ||3||
tāraṇa-taraṇa bhakta bhava-bhanjana,
adhama-udhāraṇa santa sahāyaka ||4||
dharmmadāsa iti vadata vinayakarī,
satyakabīra more pitu-māyaka ||5||

sākhī

prema-prema saba koī kahai, prema na cinhain koya |
jā māraga sāheba mile, prema kahāvai soya ||1||
kabīra bhāṭhī prema kī, bahutaka baiṭhe āya |
sira saunpe so pīvasī, nātara piyā na jāya ||2||

bhajana 2

bole kāyā mein suganavān, banake laharī ||ṭeka||

pijaḍā sāḍhe tina hātha kā, tāmain suganā bole |
kabhī-kabhī mastī mein ākara, dila kā jauhara khole |
ḍole sanjhavā aura bihanavān banake laharī...||1||
pānca tattva ke pinjaḍā vāke, tāmen daśa daravājā |
madhya sabhā mein lagā ke āsana, baiṭhe banake rājā |
jhule prema ke jhulanavān bana ke laharī.....||2||
āpana sevā ke khātira o, rākhina nava paṭarānī |
vahi rānina se bāta karatu hai, āpahun bhare hunkārī |
māne ūnahūn ke kahanavān banake laharī…....||3||
kahain kabīra ho jā dina suganā, pijaḍe se uḍi jaīhain |
sonā esī jalā ke kāyā, ansuvana se mukha dhoīhain |
roīhain āpana aura beganavān banake laharī……||4||

sākhi

kabīra garva na kijiye, ūncā dekhi āvāsa |
kāla parau bhunyi leṭanā, ūpara jamasī ghāsa ||1||
kabīra naubata āpanī, dina dasa lehu bajāya |
yaha pura paṭṭana yaha galī, bahuri na dekho āya ||2||

bhajana 3

jagata cali jāya yahān koī na rahaiyā ||ṭeka||

cale gaye kumbha karaṇa aru rāvaṇa |
cale gaye rāma lakhana cāron bhaīyā ||1||
cale gaye nanda yaśomati maīyā |
cale gaye gopī gvāla kanhaiyā ||2||
utapati paralaya cāron yuga bīte |
kāla balī se koī na bacaiyā ||3||
kahain kabīra suno bhāī sādho |
satyanāma eka hoīhain sahaīyā ||4||

sākhī

namaḥ sadguru devāya, namo mangala rūpiṇe |
namaḥ satyasvarūpāya, kabīrāya namo namaḥ ||

bhajana 4

so satagurū mohī bhāvai santo jo, āvāgavana miṭāvai /
ḍolata ḍige na bolata bisare, asa upadeśa sunāvai ||ṭeka||

bina haṭha karma triyā so nyārā, sahaja samādhi lāgāvai |
dvāra na roke pavana na roke, nā anahada urajhāvai ||1||
ye mana jahān jāya tahān nirbhaya,
samatā se ṭaharāvai |
karma karai aura rahe akarmī, esī yukti batāvai ||2||
sadā ānanda phanda se nyārā,
bhoga mein yoga sikhāvai |
taja dharatī ākāśa adhara main,
prema maḍaiyā chāvai ||3||
gyāna sarovara śūnya śilā para, āsana acala jamāvai |
kahain kabīra satagurū soī sāncā,
ghaṭa mein alakha lakhāvai ||4||

sākhi

guru bina gyāna na ūpajai, guru bina mile na bheva |
guru bina sanśaya nā miṭai, jaya jaya jaya gurudeva ||

bhajana 5

vandanīye gurudeva tumako, vandanīye gurudeva ||ṭeka||

kāla-jāla ke phandā bhārī, parakha lakhāyo bheva ||1||
veda śāstra saba khojata hāre,
marama na jāne koya ||2||
guru samāna nahin koū dātā, tākī karihaun seva ||3||
sāheba kabīra abhaya pada dātā,
pūraṇa parakha sameva ||4||

sākhī

guru pārasa guru parasa hain, candana vāsa suvāsa |
satguru pārasa jīva ko, dinhā mukti nivāsa ||

bhajana 6

sadguru (gurujī) mile jilāvana hāra,
suratiyā jhūla rahī hai ||ṭeka||

gale mila sakhiyān mangala gāvain,
kara kara ke singāra ||1||
nāma hiṇḍolā paḍā gagana mein,
jhule suratiyā ḍāra ||2||
gagana maṇḍala mein seja piyā kī,
baiṭhe līlā-dhāra ||3||
śrī satguru kī khoja lagāo,
pahunco to khule dvāra ||4||

kahata kabīra suno bhāī sādho!
abakī na jama kī bāra ||5||

sākhī
āye hain so jāyenge, rājā ranka phakīra |
eka sinhāsana caḍhi cale, eka bāndhe jāta janjīra ||

bhajana 7
yaha pinjaḍā nahin terā re hansā,
yaha pinjaḍā nahin terā ||ṭeka||
kankaḍa cuni cuni mahala banāyā,
loga kahain ghara merā |
nā ghara terā nā ghara merā, ciḍīyā raina baserā ||1||
dādā bābā bhāī bhatījā, koī na cale sanga terā |
hāthi ghoḍā māla khajānā,
paḍā rahe dhana ḍherā ||2||
mātu pitā svāratha ke sāthī, kahate merā merā |
kahata kabīra suno bhāī sādho !
eka dina jangala ḍerā ||3||

sākhī
tīna loka hai deha mein, roma-roma mein dhāma |
sataguru bina nahin pāīye, satya sāra nija nāma ||

bhajana 8
hiravā gavān ke sasurā, jālu bāri dhaniyā ||ṭeka||
kavana mantra ha kavana tantra ha,
kavana bheda ha janiyān |
kā toharā sanga jāī ye gorī, kāha mūla nisaniyān ||1||
o' hanga mantra so' hanga tantra ha,
alakha bheda ha janiyān |
śabda ī toharā sātha mein jāī,
sataha mūla nisaniyān ||2||
gile dudha para makkhī baiṭhe,
pānva gaīla laṭakaniyān |
hātha hilāve pānva ḍolāve,
samujha-samujha pachataniyān ||3||
kāyā gaḍha eka vṛkṣa bā lāgala,
okara pāta jhunajhuniyān |
kahain kabīra suno bhāī sadho!
trikuṭī mein hamaro dukaniyān ||4||

sākhi
māyā dīpaka nara patanga,
bhrami-bhrami māhin paḍanta |
koyi eka guru gyāna te, ubare sādhu santa ||

bhajana 9
kā nainā camakāvai ṭhaginiyān, kā nainā camakāvai ||ṭeka||
kaddū kāṭa mṛdanga banāya, nīmbū kāṭa manjīrā |
pānca tarauī mangala gāvain, khīrā nāca dikhāvai ||1||
rūpā pahiri ke rūpa dikhavalī,
sonā pahiri tarasāvai |
gale ḍāla motiyana ke mālā,
tīnon loka bharamāvai ||2||
bhainsa padminī āśika cuhā, meḍhaka tāla lagāvai |
colā pahiri ke jadahā nāce, ūnṭa viṣṇu pada gāvai ||3||
āma ḍari caḍhi kachuā toḍe, gilahari cuni-cuni lāvai |
kahata kabīra suno bhāī sādho !
bagulā bhoga lagāvai ||4||

sākhī
satya nāma ko khojahu, jāte agni bujhāya |
binā nāma bāncai nahīn, dharmarāya dhari khāya ||

bhajana 10
cādara ho gaī bahuta purānī,
aba soca samajha abhimānī ||ṭeka||
ajaba julāhe cādara bīnī sūta karama kī tānī |
surata nirati ko bharanā dīnī,
taba sabake manamānī ||1||
maile dāga paḍe pāpana ke, viṣayana mein lipaṭānī |
gyāna ke hāthon lāya ke dhovo,
satasangata ke pānī ||2||
bhaī mailī aura bhīngī sāḍī, lobha moha mein sānī |
ese hī oḍhata umara ganvāī, bhalī burī nahīn jānī ||3||
śankā mati jānu jiya apane, hai ye vastu virānī |
kahain kabīra ye rākha yatana se,
phira nahin hāthana ānī ||4||

sākhī
kabīra sūtā kyā kare, kāhe na dekhe jāgi |
jāke sanga te bichuḍe, tāhī ke sanga lāgi ||

bhajana 11
karo re bande ! vā dina ke tadabīra ||ṭeka||
jaba yamarājā āna paḍenge, tanika na dharihain dhīra |
māra ke sonṭa prāṇa nikālain,
nainana bharihain nīra ||1||
bhavasāgara eka agama pantha hai,
jala bāḍhai gambhīra |
nāva na beḍā bhīḍa ghanerā,
khevaṭa havainge tīra ||2||
ghara tiriyā aradhangī baiṭhe,
māta-pitā sukhabīra |
pāla nāva kī kauna calāve, sanga na jāta śarīra ||3||
laike bore naraka kuṇḍa mein, vyākula hota śarīra |
kahain kabīra nara ! aba kī ceto,
māpha hoya takadīra ||4||

sākhī
āgi jo lagī samudra mein, dhuān na paragaṭa hoya |
kī jāne jo jari muvā, ki jākī lāī hoya ||

bhajana 12

naiharavā hamakā na bhāvai ||ṭeka||

sāyīn kī nagarī parama ati sundara,
jahān koī jāve na āvai |
cānda sūraja jahān pavana na pānī,
ko sandeśa pahucāvai |
darada yaha sāyīn ko sunāvai, naiharavā…..||1||
āge calaun pantha nahin sūjhe,
pīche doṣa lagāvai |
kehi vidhi sasure jāūn mori sajanī,
virahā jo jarāvai |
viṣaya rasa nāca nacāvai, naiharavā……..||2||
bina satguru apanon nahin koī,
jo yaha rāha batāvai |
kahata kabīra sunon bhāī sādho !
sapane na prītama pāvai |
tapana yaha jiyā kī bujhāvai, naiharavā…..||3||

sākhī

jaba tū āyā jagata mein, jagata hanse tū roya |
esī karanī kara calo, tū hanse jaga roya ||

bhajana 13

chāṇḍi cale banajārā, ṭhaṭharī chāṇḍi cale banajārā ||ṭeka||

īsa ṭhaṭharī bīca sāta samandara,
koī mīṭhā koī khārā |
īsa ṭhaṭharī bīca cānda sūrya hai,
yahi bīca nava lakha tārā ||1||
īsa ṭhaṭharī bīca pānca ratana hai,
koī koī parakhanahārā |
gira paḍe ṭhaṭharī ḍiga paḍe mandira,
jāme cetanā gārā ||2||
īsa ṭhaṭharī bīca nava daravājā,
daśavān guputa vicārā |
kahain kabīra suno bhāī sādho !
sadguru śabada ubārā ||3||

sākhī

ghaṭa ghaṭa merā sānyīyān, sūnī seja na koya |
balihārī ghaṭa tāsu kī, jā ghaṭa paragaṭa hoya ||

bhajana 14

hara mein hari ko dekhā sādho !
hara main hari ko dekhā ||ṭeka||

āpa māla au āpa khajānā, āpe kharacana vālā |
āpa galī-galī bhikṣā māngе, liye hātha mein pyālā ||1||
āpahin madirā āpahin bhāṭhī, āpa cuvāvana hārā |
āpa surāhi āpe pyālā, āpa phire matavālā ||2||
āpahin nainā āpahin sainā, āpahin kajarā kālā |
āpa goda main āpa khelavai, āpai mohana vālā ||3||
ṭhākura dvāre brāmhaṇa baiṭhā, makkā me daraveśā |
kahain kabīra suno bhāī sādho ! hari jaise ko taisā ||4||

sākhī

kabīra isa sansāra mein, koī kāhu kā nāhin |
ghara kī nārī ko kahe, tana kī nārī nāhin ||

bhajana 15

kyā dekhe darpaṇa mein mukhaḍā,
tere dayā dharama nahin tana mein ||ṭeka||

gaharī nadiyā nāva purānī, utarana cāhe pala mein |
prema kī naiyyā pāra utara gaye,
pāpī būḍe jala mein ||1||
darpaṇa dekhata mocha maroḍata,
tela cuvata julaphana mein |
eka dina esā āna paḍegā, kāgā nocata vana main ||2||
amavā kī ḍāri koyaliyā bole,
suvanā bole vana mein |
gharabārī ghara hi main rājī,
phakkaḍa rājī vana mein ||3||
sundara tiriyā bīḍā lāvai, sevā cāhe anga mein |
kahain kabīra suno bhāī sādho !
koī na jaiihain sanga mein ||4||

sākhī

sukha mein sumiraṇa nā kiyā,
duḥkha mein karatā yāda |
kahain kabīra tā dāsa kī, kauna sune phariyāda ||

bhajana 16

nāma na āvata hiye jinake, nāma na āvata hiye ||ṭeka||

kāha bhaye nara kāśī base re, kā gangā jala pīye ||1||
kāha bhaye nara jaṭā re baḍhāye, kā gudaḍī ke sīye ||2||
kāha bhaye nara kaṇṭhī ke bāndhe,
kāha tilaka ke dīye ||3||
kahain kabīra suno bhāī sādho !
nāhaka ese jīye ||4||

sākhī

mānuṣa terā guṇa baḍā, mānsa na āvai kāja |
hāḍa na hote ābharaṇā, tvacā na bājana bāja ||

bhajana 17

banai jo kucha dharama kara le, yahī eka sātha jāyegā /
gayā avasara na phira tere, ye haragija hātha āyegā ||ṭeka||

divānā bana ke duniyan mein,
samaya anamola khotā hai |
diye lākhon kī daulata bhī,
na pala rahane tū pāvegā ||1||
dharī raha jāyegī terī, akaḍa sārī ṭhikāne para |
jaba āke yama jakaḍa gardana,
pakaḍa kara dhara dabāyegā ||2||
kuṭumba parivāra suta soī, sahāyaka hogā na koī |

tere pāpon kī gaṭharī khuda,
tuhi śira para uṭhāvegā ||3||
garbha mein thā kahā tūne,
na bhūlūngā prabhu tujhako |
bhalā tū jāyakara apanā,
use kyā muhan dikhāvegā ||4||
tujhe to ghara se jangala mein,
terā hi khuda bakhuda beṭā |
sulāke lakaḍiyon ke ḍhera, mein tujhako jalāvegā ||5||
kahain kabīra samujhāī, tu kahanā māna le bhāī |
nahin to apanī ṭhakurāī, vṛthā sārī gamāvegā ||6||

sākhī

mālī āvata dekha ke, kaliyana karīn pukāra |
phule-phule cuna liye, kālha hamārī bāra ||

bhajana 18

re mana ! phulā-phulā phire jagata mein,
kaisā nātā re //ṭeka//

mātā kahai yaha putra hamārā, bahina kahai vīra merā |
kahai bhāī yaha bhujā hamārī,
nāri kahai nara merā ||1||
peṭa pakaḍi ke mātā rovai, bānha pakaḍi ke bhāī |
lapaṭi-jhapaṭi ke tiriyā rovai, hansa akelā jāī ||2||
jaba lagi jivai mātā rovai, bahina rovai dasamāsā |
teraha dina taka tiriyā rovai,
phera karai gharabāsā ||3||
cāra gajī caragajī mangāyā, caḍhā kāṭha kī ghoḍī |
cāron kone āga lagā dī, phūnka diyā jasa horī ||4||
hāḍa jarai jasa bana kī lakaḍī, keśa jarai jasa ghāsā |
sonā esī kāyā jari gaī, koī na āvai pāsā ||5||
ghara kī tiriyā rovana lāgī, ḍhūnḍha phirī cahupāsā |
kahanhi kabīra suno bhāī sādho !, chāḍo jaga kī āśā ||6||

sākhī

kabīra saba jaga niradhanā, dhanavantā nahin koya |
dhanavantā soī jāniye, satyanāma dhana hoya ||

bhajana 19

bhajana binu bāvare, tune hīrā janama ganvāyā //ṭeka//

kabhī na āye santa śaraṇa mein, nā to hari guṇa gāyā |
bahi bahi marā khāya nita soyā, ese hi janama ganvāyā ||1||
yaha sansāra hāṭa baniyā kā, saba jaga saudā lāyā |
catura māla caugunā kinhā, murakha mūla ganvāyā ||2||
yaha sansāra phula semara kā, śobhā dekha lubhāya |
mārata conca nikasa gaī rūī, sira dhuni-dhuni pachatāyā ||3||
yaha sansāra māyā ke lobhī, ūncā mahala banāyā |
kahata kabīra suno bhāī sādho ! hāntha kachu nahin āyā ||4||

sākhī

sukha kā sāgara śila hai, koī na pāvai thāha |
śabda binā sādhū nahin, dravya binā nahin śāha ||

bhajana 20

jaga se najariyā nā phero ho, more surati sohāgina //ṭeka//

ye jaga cāra dinana kā melā ho,
phira nahin hāṭa bajariyā ho ||1||
ye jaga dhāndhā ke aura nahin hain,
bīta gaye hain sārī umariyā ho ||2||
yaha jaga jhūṭhī hai tana-dhana chuṭi hai,
chūṭī mahala aṭariyā ho ||3||
hamāre sāheba ke ūncī mahaliyā ho,
bīcavā main paḍa gaī sāgariyā ho ||4||
kahata kabīra jaga āśa ko tyāgo,
dharo satanāma ḍagariyā ho ||5||

sākhī

saravara taruvara santa jana, cauthā barase meha |
paramāratha ke kāraṇe, cāron dhārī deha ||1||
santa mile sukha upaje, duṣṭa mile duḥka hoya |
sevā kijai santa kī, janma kṛtāratha hoya ||2||

bhajana 21

main to una santon kā dāsa, jinhon ne mana māra liyā //ṭeka//

mana mārā tana basa kiyā, sabhī bharma bhaye dūra |
bāhara se kachu dīkhata nāhīn,
unake andara barase nūra…jinhon ne ||1||
āpā māra jagata mein baiṭhe, nahīn kisī se kāma |
īnamein to kachu antara nāhīn,
unako santa kaho cāhe rāma…jinhon ne ||2||
pyālā pī liyā nāma kā, choḍa jagata kā moha |
hamako sataguru ese mila gaye,
apanī sahaja mukti gaī hoya…jinhon ne ||3||
dharmadāsa ke satguru svāmī, diyā amī-rasa pyāra |
eka bunda sāgara mein mila gaī,
unakā kyā kare yamarāya…jinhon ne ||4||
jaya gurudeva jaya jaya gurudeva…(kīrtana)

sākhī

kahain kabīra taji bharama ko, nanhā hvai kara pīva |
taji ahan guru caraṇa gahu, yama se bāncai jīva ||

bhajana 22

binā re khevaiyā naiyā, kaise lāge pāra ho //ṭeka//

kitane nigure khaḍe kināre, kitane khaḍe majhadhāra ho |
kitane nigure karama ke cūke,
bandhe yama ke dvāra ho ||1||
bhavajala ke sāgara pāve, laharavā merā yāra ho |
pichalā vādā samhālo yāro, lahara uṭhe vikarāla ho ||2||
santana jahāja yahān lāde, hansana kerā bhāra ho |
nāma phaharā bāndha ke, nara utare bhavapāra ho ||3||
santana ke bole bāṇī, rahanī ho apāra ho |
sāheba kabīra yaha kaharavā gāvain,
kāyā mein karatāra ho ||4||

sākhī

pattā ṭūṭā ḍāla se, le gaī pavana ūḍāya |
aba ke bichuḍe nā milain, dūra paḍenge jāya ||1||
peḍa kahatu hai pāta se, suna patte merī bāta |
duniyān kī yaha rīti hai, eka āvai eka jāta ||2||

bajhana 23

hansā cale hain sataloka, jagata sapanā bhayo…sādho ||
banda bhaye hain darabāra,
rūpa nahīn rekhā ho…sādho ||ṭeka||

pānca tattva kara pīnjarā,
tanika nāhīn bigaḍā ho…sādho |
gṛha hai kula parivāra,
kauna rahā nikasā ho…sādho ||1||
rovata unakara nāri, nayana jala dhārā ho…sādho |
ḍūba gaye hain mero nāva,
tū khevanahārā ho…sādho ||2||
mukha para dhari dinha āga,
kāṭa bahuvārā ho…sādho |
putra liye hain kara bānsa,
śīśa jāya mārā ho…sādho ||3||
saba jīvana kara mūla, tāhi nahin jānā ho…sādho |
kahain kabīra pukāra, samujha begānā ho…sādho ||4||

sākhī

mandira mānhī jhalakatī, dīvā kaisī jyoti |
hansa baṭāūn cali gayā, kāḍhī ghara ka choti ||

bhajana 24

bangalā khūba banāyā be, andara nārāyaṇa soyā ||ṭeka||

isa bangale kā nava daravājā bīca pavana kā khambhā |
āvata-jāvata koī nahin dekhā,
ye hī baḍā acambhā…bangalā ||1||
pānca tattva kī bhīta banāī, tīna guṇon kā gārā |
roma kī onā cāla calāve, cetana karane hārā..bangalā ||2||
mana kahatā hai hāthī ghoḍā, ūnṭa kī pālakī honā |
sāheba jī ke dila mein hai,
nange pānva se calanā…bangalā ||3||
pānca pacīsa se patrā bānce, manavā thāla bajāve |
surati nirati kī mṛdanga bajāve,
rāga chatīson gāve…bangalā ||4||
mana kahatā hai daulata karanā,
ūnce mahala mein sonā |
sāheba jī ke dila main hai,
satyanāma tu japanā…bangalā ||5||
mana kahatā hai jhorū laḍakā, bahuta roza hai jīnā |
sāheba jī ke dila mein hai,
eka dina miṭṭī milanā…bangalā ||6||
aparampāra baḍā hī yāro, sataguru bheda batāvain |
kahain kabīra suno bhāī sādho ! jinha khojai tinha pāvai…bangalā ||7||

sākhī

kabīra mandira lākha kā, jaḍiyā hīrā lāla |
divasa cāri kā pekhanā, vinasi jāyegā kāla ||

bhajana 25

jīvaḍā do dina kā mehamāna,
aba tuma kaba sumiroge rāma ||ṭeka||

garbhāpana mein hātha juḍāyā,
nikala huā beīmāna…jivaḍā ||1||
bālāpana mein khela gumāyā,
taruṇāpana mein kāma…jivaḍā ||2||
buḍḍhepana mein kānpana lāgā,
nikala gayā aramāna…jivaḍā ||3||
jhūṭhī kāyā jhūṭhī māyā,
ākhira mauta nidāna…jivaḍā ||4||
kahain kabīra suno bhāī sādho !
yahī ghoḍa maidāna…jivaḍā ||5||

sākhī

kabīra vādina yāda kara, paga ūpara tala śīśa |
mṛtu maṇḍala mein āya ke, bisari gayā jagadīśa ||

bhajana 26

je tana laga gaī soī jāne, dūjā kyā jāne mere bhāī ||ṭeka||

rāstā mein eka ghāyala ghūme, ghāva nahīn re bhāī |
sataguru bāṇa virahā kā mārā, sāla rahā tana māhīn ||1||
dhannā bhakta raidāsa nāmadeva, laga gaī mīrā bāī |
balakha bukhāra ko esī laga gaī, choḍa gayā bādaśāhī ||2||
rankā laga gaī bankā laga gaī, laga gaī senā nāī |
pīpā nāda bharā ke laga gaī, kūda paḍā jala māhīn ||3||
sāheba kabīrā mana ke dhīrā, jina ye lagana lagāī |
jinakī coṭa niśāne laga gaī, hate cākarī pāī ||4||

sākhī

satayuga tretā dvāpara, yaha kaliyuga anumāna |
sāra-śabda eka sānca hai, aura jhūṭhā saba gyāna ||

bhajana 27

koī sunatā hai guru gyānī,
gagana mein āvāja ho rahī jhīnī ||ṭeka||

pahale hotā nāda bindu se, phera jamāyā pānī |
saba ghaṭa pūrana pūra rahā hai, ādi puruṣa niravāṇī ||1||
jo tana pāyā patā likhāyā, tṛṣṇā nahīn bhulānī |
amṛta rasa choḍa viṣaya rasa cākhā,
ulaṭī phānsa phānsānī ||2||
o' ham so' ham bājā bāje, trikuṭī śunya samānī |
īngalā pingalā suṣamana śodho,
śūnya dhvajā phaharānī ||3||
dīda bandīda hama najaron se dekhā, ajarā amara niśānī |
kahain kabīra suno bhāī sādho !
yahī ādi kī bānī ||4||

sākhī

balihārī guru āpakī, ghaḍī ghaḍī sau bāra |
mānuṣa te devatā kiyā, karata na lāgī bāra ||

bhajana 28

sadguru phakata jagata mein, duhkha se chuḍāne vāle /
bhavasindhu mein kuṭumba ke,
saba hain ḍubāne vāle //ṭeka//

mātā pitā tumhāre, tiriyā au suta vicāre |
svāratha ke apane sāre, nātā lagāne vāle ||1||
aba to sage ghanere, kahatā hai jinako mere |
ākhira ko koī tere, nahin kāma āne vāle ||2||
yama se paḍegā pāle, musaken jakaḍa ke tāne |
koī na usa ṭhikāne, honge bacāne vāle ||3||
pāke manuṣya tana ko, karale pavitra mana ko |
phule na dekha dhana ko, daulata kamāne vāle ||4||
sunale ye bāta nīkī, pyāre kabīra jī kī |
bhakti se usa dhanī kī, e munha chipāne vāle ||5||

sākhī

māyā sama nahīn mohinī, mana samāna nahin cora |
harijana sama nahin pārakhī, koī na dīkhai aura ||

bhajana 29

pyāre prapanca mein tuma, dina rāta kyon gujāro ?

mānuṣa kā tana ye pāke, kucha to jarā vicāro ||ṭeka||
do dina kā ye baserā, kahate ho merā merā |
saba choḍa apanā ḍerā, khālī gaye hajāron ||1||
āśā kī pāga pāge, tṛṣnā ke pīche lāge |
phirate ho kyon abhāge, santoṣa dila main dhāro ||2||
devegā soī pāve, aura kucha na kāma āve |
eka dharmma sātha jāve, yaha bāta mata bisāro ||3||
kahate kabīra gyānī, sansāra hai ye phānī |
taja apanī saba nādānī, mamatā au mada ko māro ||4||

sākhī

kabīra soī śuramā, manaso manḍai jūjha |
pānco indrī pakaḍi ke, dūra kare saba dūjha ||

bhajana 30

ānā kabīra pantha mein, khālā kā ghara nahīn /
āte hain śura nara jinhen, duniyā kā ḍara nahīn //ṭeka//

corī au jhūṭha tyāga kara, sacce sadā rahen |
ḍalen parāī nāri para, haragija nazara nahīn ||2||
upadeśa to karate hain, sabhī pāpa na karanā |
sunate hain apane kāna, āpa khuda magara nahīn ||2||
bālaka jo āyakara, kahai vāziba bāta |
usakī bhī mānane mein, unako uzara nahīn ||3||
rutabā au māla dhana pai, jo karatā hai kucha garūra |
usakā to īsa dharama main, jarā bhara gujara nahin ||4||
kahate hain dharamadāsa, sāpha-sāpha ye sabase |
mukti kā aura ṭhaura, kahīn sara basara nahīn ||5||

sākhī

tana ko jogī saba kare, mana ko kare nā koya |
sahaje saba sidha pāīye, jo mana jogī hoya ||

bhajana 31

sādhū kā veṣa dhara ke, gyānī jo tuma kahāvo /
atiśaya udāra apanā, antahkaraṇa banāvo //ṭeka//

karttavya apnā pālo, yama niyama ko sambhālo |
durmati ko dūra ṭālo, sukṛta sadā kamāo ||1||
eka satyavrata dhārī, kāmādi ripu nivārī |
bani śudha bramhacārī, viṣayon se mana haṭāvo ||2||
paisā na pāsa joḍo, āśā jagata kī choḍo |
trṣṇā se mukha ko moḍo, māyā mein mata lubhāvo ||3||
nija karmma kī kamāī, yaha tila ghaṭe na rāī |
sukha duḥkha ko pāya bhāī, mata dhairyya ko ḍigāvo ||4||
upakāra ko sabhī ke, karalo vicāra jī ke |
bhūlakara bhī na kisī ke, dila ko kabhī dukhāvo ||5||
viṣa kā svāda cākho, mukha se na jhūṭha bhākho |
jīvon pe dayā rākho, upadeśa sadṛḍhāvo ||6||
phirate ho kyon bhulāne, bina guru kabīra jane |
paḍha-paḍha ke pothipāne, bakavāda mata baḍhāvo ||7||

sākhī

godhana gajadhana vājidhanam aura ratana dhana khāna |
jaba āvai santoṣa dhana, saba dhana dhūli samāna ||

bhajana 32

nara tuma kāhe ko māyā joḍī //ṭeka//

koḍī-koḍī māyā joḍī, joḍī lākha karoḍī |
jaba kharacana kī bārī āī, rahigai hātha sikorī ||1||
hāthī lāye ghoḍā lāye, lāye saina baṭorī |
anta samaya koī kāma na āvai, caḍhe kāṭha kī ghoḍī ||2||
jāya utāren gangā ghāṭa para, kapaḍā līnhā choḍī |
bhāī bandhu vimukha hoī baiṭhe, phūnki diyo jasa horī ||3||
yama ke dūta dīhain duḥkha bhārī, hātha paira saba torī |
kahahin kabīra suno bhāī sādho ! ḍāri naraka mein boḍī ||4||

sākhī

kabīra sangati sādhu kī, jyon gandhī kā vāsa |
jo kucha gandhī de nahīn, to bhī vāsa suvāsa ||1||
mathurā kāśī dvārikā, haridvāra jagannātha |
sādhu sangati hari bhajana bina, kachu na āvai hātha ||2||

bhajana 33

santana ke sanga lāga re, terī acchī banegi //ṭeka//

hansana kī gati hansa hī jāne, kyā jānegā koī kāga re ||1||
santana ke sanga puṇya kamāī,
hoya baḍo tere bhāga re ||2||
dhruva kī banī prahalāda kī bana gaī,
hari sumiraṇa vairāga re ||3||
kahate kabīra (sāheba) suno bhāī sādho!
rāma bhajana me lāga re ||4||

sākhī

jā ghaṭa prīti na prema rasa, puni rasanā nahīn rāma |
te nara paśu sansāra mein, upaji mare bekāma ||

bhajana 34

bhajo re bhaīyā rāma govinda hari ||ṭeka||

japa tapa sādhana kachu nahīn lāgata,
kharacata nāhin gaṭharī ||1||
santata sampata sukha ke kāraṇa, jāse dhūla parī ||2||
kahata kabīra jā mukha rāma nahin,
vo mukha dhūla bharī ||3||

sākhī

nāma liyā tina saba liyā, saba śastrana kā bheda |
binā nāma narake gaye, paḍhi guni cāron veda ||

bhajana 35

he sadguru kabīram ! haro kāla pīram,
he sāheba kabīra ! haro bhakta pīram ||ṭeka||

āśā ko gāḍe samudra to haṭā thā,
jagannātha mandira usī dina banā thā |
lagī āga pandā kā saba tana jalā thā,
mahāmantra pandā ne yahī japā thā..he.. ||1||
girināra kī rānī ko takṣaka isā thā,
na vyāpā garala tana mein amṛta bharā thā |
usī hansa rāhī ko sankaṭa paḍā thā,
mahāmantra rānī ne yahī japā thā..he..||2||
dvāpara mein pāṇḍavon ne bhārata racā thā,
kiyā thā yagya bhārī na pūrā huā thā |
āye sudarśana to ghaṇṭā bajā thā,
mahāmantra supaṭa ne yahī japā thā..he..||3||
ībrāhima adhāma jo samajhatā khudā thā,
bandhāye the sādhu to cakkī pīsā thā |
jaba āye sadguru to bandhana kaṭā thā,
mahāmantra santon ne yahī japā thā..he..||4||
śāha sikandara ne kasanī liyā thā,
de bāvana kasanī sara ko nīcā kiyā thā |
kahain dharmmadāsa hamane sadguru kiyā thā,
mahāmantra dharmani ne yahī japā thā..he..||5||

sākhī

kabīra saba ghaṭa ātamā, sirajī sirajana hāra |
rāma kahai so rāma sama, rahatā bramha vicāra ||

bhajana 36

kucha lenā na denā magana rahanā ||ṭeka||

gaharī nadiyā nāva purānī, khevaṭiyā se mile rahanā ||1||
terā sāhiba hai tere mein, akhiyān khola dekho nayanā ||2||
pānca tattva kā banā pūtalā, jisamein rahe merī mainā ||3||
kahain kabīra suno bhāī sādho !
guru ke caraṇa mein lipaṭa rahanā ||4||

sākhī

mana makkā dila dvārikā, kāyā kāśī jāna |
daśa dvāre kā deharā, tāmein jyoti pichāna ||

bhajana 37

pānī mein mīna piyāsī, mohīn suni-suni āvata hānsī ||ṭeka||

ātama gyāna binā nara bhaṭake, koī mathurā koī kāśī |
jaise mṛgā nābhi kastūrī, bana-bana phirata udāsī ||1||
jala bica kamala kamala bica kaliyān,
tāpara bhanvara nivāsī |
so mana basa trailokya bhayo hai, yatī satī sanyāsī ||2||
jāko dhyāna dhare vidhi hari hara, muni jana sahasa aṭhāsī |
so tere ghaṭa māhin virāje, parama puruṣa avināśī ||3||
hai hājira tehi dūra batāvai, dūra kī bāta nirāsī |
kahain kabīra suno bhāī sādho !
guru bina bharama na jāsī ||4||

sākhī

prītama ko patiyān likhūn, jo kahun hoya videśa |
tana mein mana mein naina mein, tāko kahān sandeśa ||

bhajana 38

ghunghaṭa ke paṭa khola re, toko piyā milenge ||ṭeka||

ghaṭa ghaṭa mein vaha sānyī ramatā,
kaṭuka vacana mata bola re ||1||
dhana yauvana kā garva na kijai,
jhūṭhā pacaranga cola re ||2||
śūnya mahala mein diyanā bāri le,
āsana se mata ḍola re ||3||
yoga jugati se ranga mahala mein,
piyā pāyo anamola re ||4||
kahain kabīra ānanda bhayo hain,
bājata anahada ḍhola re ||5||

sākhī

mana jo gayā to jāna de, dṛḍha kari rākha śarīra |
binā caḍhāya kamāna ke, kaise lāge tīra ||

bhajana 39

mana masta huā taba kyon bole ||ṭeka||

hīrā pāyo gānṭha gaṭhiyāyo, bāra bāra vāko kyon khole |
halakī thī taba caḍhī tarājū, pūrī bhaī taba kyon tole ||1||
surati kalārī bhaī matavārī, madavā pī gaī bina tole |
hansā pāye māna sarovara, tāla talaiyā kyon ḍole ||2||
terā sāheba hai ghaṭa māhīn, bāhara nainā kyon khole|
kahain kabīra suno bhāī sādho, sāhiba mila gaye tila ole ||3||

sākhī

jina khojā tina pāīyā, gahare pānī paiṭha |
mein bapurā būḍana ḍarā, rahā kināre baiṭha ||

bhajana (gajala) **40**

ḍhūnḍha-ḍhūnḍha main hārā sadguru milā na daraśa tumhārā ||ṭeka||

rāmeśvara jagadīśa dvārikā, badrīnātha kedārā |
kāśī mathurā aura ayodhyā, ḍhūnḍhā giri giranārā ||1||
pūraba paścima uttara dakṣiṇa, bhaṭakā saba sansārā |
aḍhasaṭha tīratha mein phira āyā, daraśa hetu bahubārā ||2||
japa tapa vrata upavāsa kiye bahu, sanyama niyama acārā |
bhaī na bhenṭa nātha svapanehumā,
asa kahān bhāgya hamārā ||3||
dina nahīn caina raina nahīn nidrā, vyākula hai tana sārā |
aba to dharmadāsa ko kijai, darśana de bhavapārā ||

sākhī

sāheba terī sāhebī, saba ghaṭa rahī samāya |
jyon menhadī ke pāta mein, lālī lakhī na jāya ||1||
kasturī kuṇḍali basai, mṛga ḍhūnḍhai vana mānhin |
vaise ghaṭa-ghaṭa rāma hai, duniyā dekhata nāhin ||2||

bhajana 41

moko kahān ḍhūnḍhe bande main to tere pāsa mein ||ṭeka||

nā tīratha mein nā mūrata mein, nā ekānta nivāsa main|
nā mandira mein nā masjida mein, nā kāśī kailāsa mein ||1||
nā main japa mein nā main tapa mein,
nā main vrata upavāsa mein |
nā main kriyā karma mein rahatā,
nahīn yoga sanyāsa mein ||2||
nahīn prāṇa mein nahīn pinḍa mein,
nā bramhāṇḍa ākāśa mein |
nā main bhrakuṭi bhanvara guphā mein,
saba śvāsana kī śvāsa mein ||3||
khojī hoya turata mila jāūn, eka pala kī talāśa mein |
kahai kabīra suno bhāī sādho !
main to hūn viśvāsa mein||4||

sākhī

jetī lahara samudra kī, tetī mana kī daura |
sahajai hīrā nīpajai, jo mana āvai ṭhaura ||1||

bhajana 42

morā hīrā hirāya gayo kacare mā ||ṭeka||

koī purva koī paścima batāvai, koī pānī koī pathare mā ||1||
paṇḍita veda purāṇa batāvain, urajha rahe jaga jhagare mā ||2||
pānca pacīsa tīna ke bhītara, lāgi rahe bahu phikare mā ||3||
sura nara muni yati pīra auliyā,
bhūla bhulāya saba nakhare mā ||4||
kahain kabīra parakha jina pāyā,
bāndha liyā hiyā ancare mā ||5||

bhajana 43

satya purūṣa ko bhoga lāge,
śabda anāhada ghaṇṭā bāje ho ||ṭeka||
prema surati se banī rasoī,
amṛta bhojana pārasa hoī ho ||1||
kancana jhārī sukṛta thārī,
jevana baiṭhe sāheba sirajanahāra ho||2||
jevahin saheba santa saba sangā,
gāvahin dāsa sukha prema ānandā ho ||3||
jaba se kāla bhayo hai adhīnā,
taba se hansa bhayo paravīnā ho ||4||
pāye parasāda jala acavana kīnhā,
mahā prasāda dāsa ko dīnhā ho ||5||
kahain kabīra pūraṇa bhayo bhāga,
jaba satgurū mastaka diyo hātha ||6||

sākhī

eka śabda sukha khāni hai, eka śabda dukha rāśi |
eka śabda bandhana kaṭe, eka śabda gala phānsi ||

bhajana 44

sāheba śabda gahe koī śūrā ||ṭeka||

tana-mana tyāgo pīṭha na lāge, karī cākarī pūrā |
lāja dharma terī sāheba rakhihain himmata karo jarūrā ||1||
āśā tṛṣnā kanaka kāminī, moha jahara kā kūrā |
śūrā hoya laḍe raṇa bhītara, bhāge kādara krūrā ||2||
sāheba kā paravānā āyā, calanā naina hajūrā |
bramhā viṣṇu śambhu sanakādika, jehi ghara lage majūrā ||3||
duniyān mein bahu santa-pantha hain, koī jhūṭhā koī pūrā |
pīrana ke saba pīra kahāye, guru kabīra manśūrā ||4||
khāna-pāna saba nirmala karale choḍo bhānga dhatūrā |
kahain kabīra suno bhāī sādho ! mile mukti bharapūrā ||5||

sākhī

bande tu kara bandagī, to pāve dīdāra |
avasara mānuṣa janma kā, bahuri na bārambāra ||

bhajana 45

sāheba eiso dina kaba aīhain /
satyanāma ko chāṇḍi patita mana, mero ante na jaīhain ||ṭeka||

ulajhana jhanjhaṭa sakala naśai-īhain,
cintā citā bujhai-īhain |
hoya niradvandva cittta kendrita hvai,
satyanāma guṇa gai-īhain ||1||
madhu miśrī se adhika madhuratā,
satyanāma mein paīhain |
pala-pala pī-pī rāmanāma rasa,
kabahun nāhin aghai-īhain ||2||
jo bālaka 'mān' lalaki pukāre, yon kahi rāma bulai-īhain |
uchali goda mein lipaṭi gale son, moda alaukika paīhain ||3||
naina nirakha nīra gada-gada ura,
tana pulakita hvai jai-īhain |
nāma leta nā yahin rahi jai-īhain,
sārā jagata herai-īhain ||4||
suta banitā dhana-dhāma baḍāī,
ina mahan nāhin bhulai-īhain |

satyanāma ke āge sahajahin, saba phīke ho jai-īhain ||5||
sadguru sāheba ye jīvana mein, dina vaiso kyā aīhain ?
nāma sudhā sāgara mein sāhiba, mana gāgara ho jai-īhain ||6||

sākhī

cakavī bichuḍī raina kī, āya mile parabhāta |
jo jana bichuḍe nāma so, divasa mile nahin rāta ||

bhajana 46

yaho more byāha karaila ho bābā,
ajara-amara ghara nāma ho /
avarana varana rūpa nahīn mūrtī,
gupta prakaṭa eka dhyāna ho //ṭeka//

ajara-amara more sāsura ho bābā,
candra suraja kī bājī ho |
āṭha pahara jahān naubata bāje,
sadguru nāma niśāna ho ||1||
gyāna vimala ke cunarī ho bābā,
dhyāna ghūnghaṭa mukha moḍa ho |
mai pati priyatama ko rahun nirakhaun,
surati-nirati eka ṭhānva ho ||2||
nahin kachu more bhojana bābā,
ajapā ke jalapāna ho |
manavā hī ārasī ho bābā, adbhuta rūpa apāra ho ||3||
nahīn hamāro ghara devara bābā,
nahin ghara nanadi dayāda ho |
nahīn hamaro koī bairana bābā, sāsu bhaīla avasāna ho ||4||
bhaīla dayā hama sāsura calanī, koī nahīn barajanihāra ho |
bhāī bhatījā au parijana saba, choḍi cale parivāra ho ||5||
abakī gavanā bahuri nahin avanā,
nahin dīkhata sansāra ho |
sāheba kabīra guru mangala gāven,
rahaba sāheba jī ke pāsa ho ||6||

sākhī

kabīra hari ke rūṭhate, guru ke śaraṇe jāya |
kahain kabīra guru rūṭhate, hari nahin hota sahāya ||

bhajana 47

mere saguru hain rangareja, cunari morī ranga ḍārī //ṭeka//

śabda kā kuṇḍa neha ke jala mein, prema ranga diyo bora |
duḥkhadāyī ranga chuḍāya ke re,
khūba rangī jhakajhora ||1||
syāhī ranga chuḍāya ke re, diyo majīṭho ranga |
dhove se chūṭe nahīn re, dina-dina hota suranga ||2||
sadguru ne cunarī rangī re, sadguru catura sujāna |
saba kucha una para vāra dūn mai,
tana mana dhana aura prāṇa ||3||
kahain kabīra rangrejavā re, mujha para bhayo hain dayāla |
śitala cunarī oḍhi ke main, bhaī hon magana nihāla ||4||

sākhī

surati phansī sansāra mein, yā se paḍi gayo dūra |
surati bāndhi sthira kare, to āṭhon pahara hajūra ||

bhajana 48

surati se dekha le vaha deśa, jahān nā pahuce sadeśa //ṭeka//

dekhata-dekhata dekhana lāge, miṭa gaye sakala andeśa |
nā vahān candā nā vahān sūraja,
nahīn pavana praveśa ||1||
nā vahān jāpa nā vahān ajapā, nahīn akṣara lavaleśa |
vahān ke gaye bahuri nahin āve, nā koī kahata sandeśa ||2||
gagana guphā mein anahada garaje, bhenṭa gayā hai nareśa |
kahata kabīra suno bhāī sādho ! sataguru kiyā upadeśa ||3||

sākhī

pānī se paidā nahīn, śvāsā nāhin śarīra |
anna ahāra karatā nahīn, tākā nāma kabīra ||

bhajana 49

kāsī ke laharatālāba mein,
sāhebajī(kabīrajī) prakaṭa bhaye ho /
aho sādho sakhiyana mangala gāīlana,
gāī ke sunāvelana ho //ṭeka//

cāndanī rāta ujiyariyā, bhaīla andhiyariyā ho | aho sādho..
pāpī re papīhā ādhī rāta ko śabda sunāvelā ho ||1||
papīhā śabda mohe lagana,
mana bairāgana ho | aho sādho..
khojata phiraun mana āpana, dūsarā na jānelā ho ||2||
eka bana gaīla dūsara bana gaīla,
tīsara bana ho | aho sādho..
ūbhi-ūbhi āvala śarīra, nayana bhari jāvelā ho ||3||
bhavajala nadiyā bhayāvana,
nahīn koī āpana ho | aho sādho..
nahīn re khevaṭa patavāra, kauna vidhi utaraba ho ||4||
sādhu-santa sohara gāvelana,
gāī ke sunāvelana ho | aho sādho..
ajara-amara ghara jāva, parama pada pāvaba ho ||5||

sākhī

śvāsa śvāsa mein nāma lo, vṛthā śvāsa nā khoya |
nā jāne yehi śvāsa kā, āvana hoya na hoya ||

bhajana 50

nāma japana kyon choḍa diyā //ṭeka//

krodha na choḍā jhuṭha na choḍā,
satya vacana kyon choḍa diyā ||1||
jhūṭhe jaga mein dila lalacā kara,
asala vatana kyon choḍa diyā ||2||
kauḍī ko to khūba samhālā,
lāla ratana kyon choḍa diyā ||3||
jehi sumiraṇa te ati sukha pāvo,
so sumiraṇa kyon choḍa diyā ||4||

« khālisa » ika bhagavāna bharose,
tana mana dhana kyon na choḍa diyā ||5||

sākhī
jala mein basai kumudinī, candā basai ākāśa |
jo hai jāko bhāvatā, so tāhi ke pāsa ||
bahjana 51
more jiyarā ho, mukha parama anandā,
āja sāheba more āvenge ||ṭeka||
sakhi kāhī se angana lipāū,
kāhī se sakhi ho caukā purāūn ||1|
sakhi angana candana lipāū,
gajamotiyana se sakhi caukā purāūn ||2||
sakhi kāhe kā ḍāron baiṭhanā,
kāhe kā sakhi caraṇāmṛta lehun ||3||
sakhi tana-mana ḍārūn baiṭhanā,
caranana kā sakhi caraṇamṛta lehun ||4||
sakhi āngana boyahun lāyacī,
more phala se ho sukha amarabele ||5||
sakhi ūnce pāla samundra kā,
tale bahe yamunā ke nīra ||6||
sakhi ūnce caḍhi dekhahun,
more sāheba kā ratha-ṭhikā dūra ||7||
sakhi saba vṛndāvana ḍhūnḍhiyā,
mohe miliyā ho trikuṭī ke tāra ||8||
sakhi bhakti hetu ke kāraṇe,
mope dayā kari ho bandīchoḍa kabīra ||9||

sākhī
kabīra garva na kijiye, kāla gahe hain keśa |
nā jāno kita mārihain, kyā ghara kyā paradeśa ||
bhajana 52
calo-calo hansā vahi deśa, jahān tero piyā base ||ṭeka||
nava dasa mūla dason diśi khole,
surata gagana caḍhāve ||1||
caḍhe aṭārī sarati samhāle, bahari na bhavajala āve ||2||
jagamaga jyoti adhara mein jhalake, jhīnī rāga sunāve ||3||
madhura-madhura anahada dhuna bāje,
megha amṛta jala lāve ||4||
ṭhāḍhi mukti bhare jahān pānī, lakṣmī jhāḍū lāve ||5||
aṣṭasidhi ṭhāḍhi kara jore, bramhā veda sunāve ||6||
jaga mein guru bahuta kānaphūnkā, phānsī lāya bacāve ||7||
kahain kabīra vahī guru pūrā, jo kanta ko āna milāve ||8||

sākhī
pānī kerā bulabulā, asa mānuṣa kī jāta |
dekhata hī chipa jāyenge, jyon tārā parabhāta ||
bhajana 53
satya ke sinduravā rāmā, āpa sukṛta more sāheba /
kiyā ho more rāmā ho, śabda svarupī piyā pāība kerī ||ṭeka||
satya ke aṭariyā rāmā, lāge phulavariyā ho |
kiyā ho more rāmā ho,
cuni-cuni phulavā sejiyā bichāvala kerī ||1||
bhaīle viyahavā rāmā, more prema ānanda bhaīle |
kiyā ho more rāmā ho,
chuṭa gaīle duḥkha dūra diyā kerī ||2||
sāheba kabīra guru, gaīlen nirguṇiyā ho |
kiyā ho more rāmā ho,
aba kī gavanā bahuri nahin āība kerī ||3||

sākhī
kahain kabīra tūn lūṭa le, rāma nāma bhaṇḍāra |
kāla kaṇṭha ko jaba gahe, roke daśahun dvāra ||
bhajana 54
rāma rasa eisā mere bhāī, rāma rasa eisā hai /
jo koī pīve amara ho jāve, rāma rasa eisā hai ||ṭeka||
ūncā-ūncā saba koī cale, nīcā nā cale koī |
nīcā-nīcā jo koī cale, sabase ūncā hoya ||1||
mīṭhā-mīṭhā saba koī pīve, kaḍuvā nā pīve koī |
kaḍuvā-kaḍuvā jo koī pīve, sabse mīṭhā hoya ||2||
dhruva ne pīyā prahlāda ne pīyā, aura pīyā ravidāsā |
guru kabīra ne bhara-bhara pīyā, aura pīvana kī āśā ||3||

sākhī
hari sevā yuga cāra hai, guru sevā pala eka |
tāke paṭatara nā tule, santana kiyā viveka ||
bhajana 55
guru caraṇana kī dhūla, mastaka lāgī rahe ||ṭeka||
jaba yaha dhūla lagī mastaka para, dvividhā ho gaī dūra ||1||
īngalā-pingalā suṣamaṇi nārī, surati pahunce pūra ||2||
yaha sansāra vighna kī ghāṭī, jo nikale so śūra ||3||
rāma bhakti rāmānanda lāye,
(guru) kabīra kiye bharapūra ||4||

sākhī
lene ko satyanāma hai, dene ko annadāna |
tarane ko ādhīnatā, būḍana ko abhimāna ||
bhajana 56
satanāma sumara jaga laḍane de ||ṭeka||
korā kāgaja kālī syāhī, likhata-paḍata vāko paḍhane de ||1||
hāthī calata hai apane māraga,
kutavā bhūnke vāko bhūnkane de ||2||
devī-devā-bhūta-bhavānī, patthara pūje vāko pūjane de ||3||
kahahin kabīra suno bhāī sādho !
naraka paḍata vāko paḍane de ||4||

sākhī
cahun diśi ṭhāḍhe sūramā, hātha liye talavāra |

sabahin yaha tana dekhatā, kāla le gayā māra ||

bhajana 57

mere sainyā(piyā) nikasi gaye, main nā laḍī thī ||ṭeka||

main nā bolī main nā cālī, oḍhi cadariyā akelī paḍī thī ||1||
īsa nagarī mein daśa daravāje,
nā jāne kauna sī khīḍakī khulī thī ||2||
pānca devaraniyān pacīsa jeṭhaniyān,
nā jāne īnamein se kauna laḍī thī ||3||
kahahin kabīra suno bhāī sādho !
īsa byāhī se kumārī bhalī thī ||4||

sākhī

eka śīśa kā mānavā, karatā bahutaka hīsa |
lankāpati rāvaṇa gayā, bīsa bhujā daśa śīśa ||

bhajana 58

karama gati ṭare nāhin ṭarī ||ṭeka||

muni vaśiṣṭha se paṇḍita gyānī, śodha ke lagana dharī |
sītā haraṇa maraṇa daśaratha ko, vana mein vipati paḍī ||1||
kahān vaha phanda kahān vaha pāridhi, kahān vaha miraga carī |
sītā ko hari lai gayo rāvaṇa, suvaraṇā lanka jarī ||2||
nīca hātha haricanda bikāne, bali pātāla charī |
koṭi gāya nita dāna karata nṛpa, giragiṭa yoni paḍī ||3||
pāṇḍava jinake āpa sārathī, tinahun pe vipati paḍī |
duryodhana ko garva miṭāyo, yadukula nāśa karī ||4||
rāhu ketu aru bhānu candramā, vidhi sanyoga bharī |
kahata kabīra suno bhāī sādho ! honī hoke rahī ||5||

sākhī

saraguna kā sevā karo, niraguna kā karo gyāna |
nirguna saraguna ke pare, tahān hamārā dhyāna ||

bhajana 59

usa daragī kā marama na pāyā, jina yaha colā ajaba banāyā ||ṭeka||

pānī kī sūī pavana kā dhāgā, sānyī ko sīvata nava māsa lāgā ||1||
pānca tattva kī gudaḍī banāī, cānda sūraja doū thigaḍī lagāī ||2||
jatana-jatana kari mukuṭa banāyā, tā bica hīrā lāla lagāyā ||3||
āpahin sīvai āpa banāvai, prāṇa puruṣa ko lai pahirāvai ||4||
kahahin kabīra soī jana merā, jo cole kā kare niberā ||5||

sākhī

māyā māyā saba kahai, māyā lakhe nā koya |
jo mana se nā utare, māyā kahiye soya ||

bhajana 60

māyā mahā ṭhaginī hama jānī /
triguṇī phānsa liye kara ḍole, bole madhurī vāṇī ||ṭeka||

keśava ke kamala hoya baiṭhī, śiva ke bhavana bhavānī |
pandā ke mūrati hoya baiṭhī, tīratha hūn main pānī ||1||
yogi ke yoganī hoya baiṭhī, rājā ke ghara rānī |
kāhūn ke hīrā hoya baiṭhī, kāhūn ke kauḍī kānī ||2||
bhaktā ke bhaktina hoya baiṭhī, bramhā ke bramhāṇī |
kahata kabīra suno ho santo ! ī saba akatha kahānī ||3||

Panth News

Events, activities and news

A two days programme had been organized to celebrate the "*Antardhyana Divas*" of Sadguru Kabir Saheb at the Shree Kabir Council on the 11th and 12th of February 2006. This event saw the participation of all Kabir Panth societies, especially in the cultural programme consisting of *bhajans* and *pravachans*. It was also heartening to see small children on the stage with their short recitals of *sakhis*.

With the encouragement received for the *Magha* event, a three days programme was again hosted for the celebration of the *Prakatya Mohotsav* 2006 between 9th and 11th of June at Shree Kabir Council Ashram. The 608th Satguru Kabir *Prakatya Mohotsav Bhandara* was again piously fêted starting with the *Kabir Darshan Katha* followed by a *Sant Samagam* cum Cultural programme ending with the *Barsaint Bhandara*. The one day Kabir Darshan Katha was highly appreciated by the members. All the three days invitees were served the *Mahaprasad*.

The Sadguru Kabir Antardhyana Divas 2007 was celebrated between January 27th and February 1st. Opening event of this festival was the Cultural show organized by the Henrietta Saraswati Mandir – the Henrietta branch of Shree Kabir Council. This programme held at Henrietta, comprising of *bhajans*, *pravachans*, *sakhi* recitals by children and a short sketch, saw the active participation of the younger members of the branch. Their effort received a good acclamation by the audience.

The *Mahotsav* continued with a two days *Kabir Darshan Katha* at the *Ashram* and ended with a *Satvik Guru Puja Chwaka Arati* on the 1st of February. *Mahaprasad* was served every evening during the *Mahotsav*.

All programmes received the usual support of Kabir societies and members from Grand-Bois, Allee Brillant, Quinze Canton, Floreal, Quartier Militaire, Clunny, Morcellement St. André and Pointe Aux Piments.

The next event will be the *Prakatya Mahotsav 2007*. A cultural programme will be organized by the Floreal branch of Shree Kabir Council at the Town Hall of Municipality of Curepipe on the 15th of June as the opening event of the *Mahotsav*, followed by a three days *pravachan* between 26th and 28th June on the *Srimad Adibramha Nirupan* and a *Satvik Gyana Yagya Chauka Arati* on the 29th to conclude the celebration. Still on the occasion of the *Mahotsav*, an event has been organised by the Kabir Panthi Federation at the Village Council of Clemencia on the 24th of June 2007.

Earlier activities of the Kabir Panthi Federation saw the food distribution programme at the Brown Sequard Mental Health Care Centre of Beau Bassin and the Independence and Republic Day celebration at the Mon Choisy public beach. The food distribution was the first official programme of the Kabir Panthi Federation held on the 8th of February 2007. This event started with a one hour spiritual programme attended by inmates and staffs of the Health Care centre. Dr Joypaul represented the Ministry of Health and Quality of Life in the absence of the Minister Hon. Satish Faugoo and among the officials attending this event were, Dr Sunassee the Superintendent of Brown Sequard Mental Health Care Centre, Dr Parmessur Consultant at the Centre, Dr Arya Kumar Jagessur and other staffs and members of the centre. This was followed by a lunch offered by the Kabir Panthi Federation to the staffs and 700 inmates of the centre.

The second official programme of the Kabir Panthi Federation was the Independence and Republic Day celebration. This event was attended by the Kabir Panth community to pay tribute to the freedom fighters who fought for the Independence of Mauritius. The Chief Guest at this gathering was the Chairman of the District Council of Pamplemousses –Riviere du Rempart, Mr. Ranjiv Woochit and his team of counsellors. This one day programme consisted of a cultural programme (bhajans and pravachans) which started at 10.00 am and ended at 4.00 pm. The official flag raising ceremony was at 2.00 pm.

His Holiness 1008 Pandita Shree Hajjur Mukundamaninaam Saheb, left for the heavenly abode in the afternoon of Thursday 19th April 2007 at around 17:20 hours in the city of Nagpur, India after suffering from a cardiac failure. His "*Samādhī-Vidhī*" was held on Sunday 22nd of April at 16:00 hours in the city of Kharasia, Chattisgarh – India. To pay homage to Pantha Shree Hajur Mukundamaninaam Saheb, a "*Shradhānajali Sabhā*" was organised on the 16th of May 2007 at the Shree Kabir Council with the participation of all Mahants and devotees.■

स्वास्थ्य सुख एवं ध्यान

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन को स्वस्थ, सुन्दर एवं सुखी बनाना चाहिये । इसके लिये प्रतिदिन ३०मिनट से ६०मिनट तक आसन,
योग-क्रिया करनी चाहिये । जिससे व्यक्ति का शरीर निरोग रह सकता है एवं बीमारियों से छुटकारा भी मिल सकता है । जब शरीर स्वस्थ होगा तो व्यक्ति अपने आपको सुखी समझता है ।जब उसे उपरो? दोनों बातों का अनुभव होगा तो उसका मन उसके प्रत्येक कार्य में लगेगा, चाहे वह दिन का कार्य या ध्यान का कार्य हो । सरल योग-क्रिया से व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक शान्ति प्राप्त होती है ।

सरल योग-क्रिया (प्राणायाम) में भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी एवं शवासन करने चाहिये । इसके साथ-साथ कुछ क्रियायें (Exercise) और भी हैं, जो आसानी से की जा सकती हैं । कुछ क्रियायें रोग के अनुसार भी की जा सकती हैं । **ये क्रियायें किसी जानकार शिक्षक के समक्ष सीख कर ही करनी चाहिये** । इन क्रियाओं के करने से शुगर, गाठें, हृदय रोग, किडनी, कमरदर्द, वज़न घटाना आदि रोगों में लाभ होता है और निरोग काया प्राप्त होती है ।

योग क्रियाओं की व्याख्या (Detail of yoga Exercises)

१. भस्त्रिका (BHASTRIKA)

इस क्रिया में सुखासन में बैठकर व्यक्ति को लम्बी एवं सहज (Normal) श्वास लेनी व छोड़नी चाहिये तथा शरीर में और किसी प्रकार की कोई क्रिया (Action) नहीं होनी चाहिये । न ही श्वास को बहुत तेजी से लेना व छोड़ना चाहिये । इसका समय १मिनट से ५ मिनट तक होता है ।

लाभ – इस क्रिया से शरीर के प्रत्येक अंग को प्राण-वायु (Oxygen) पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है एवं शरीर में स्फूर्ती बनी रहती है ?

२. कपालभाति (KAPALBHATI)

इस क्रिया में सुखासन में बैठकर पेट को अन्दर दबाते हुये श्वास को बाहर छोड़ना चाहिये । इस क्रिया को मध्यम गति से करना चाहिये, बहुत तेजी से नहीं करना चाहिये । एक सेकेण्ड में एक बार पेट को अन्दर दबाते हुये श्वास को नाक से बाहर छोड़ना चाहिये । इसका समय ५ मिनट से १५मिनट तक है । थक जाने पर कुछ देर विश्राम करके फिर करना चाहिये क्योंकि यह क्रिया लगातार नहीं हो पाती है । कम से कम ३०० बार यह क्रिया अवश्य करनी चाहिये ।

लाभ – इस क्रिया के करने से पेट की १०० से अधिक बीमारियाँ ठीक होती हैं । लीवर, किडनी, आँतें व गाठें ठीक हो जाती हैं । यह पेट से सम्बन्धित सभी बीमारियों के लिये अच्छी क्रिया है ।

हानी – इस क्रिया को अधिक तेजी से करने से ऊच्च रक्तचाप (High blood Pressure) हो सकता है ।

३. अनुलोम-विलोम (ANULOM-VILOM)

इस क्रिया में दायें हाथ के अगूँठे (Right Hand Thumb) से दायीं नासिका (Right Side Nose) को बन्द कर बायीं नासिका से लम्बा सहज श्वास लेवें, फिर दायें हाथ के बीच की दो उँगलियों से बायीं नासिका को बंद कर उस श्वास को दाँयी नासिका से छोड़ें । फिर दाँयी नासिका से श्वास लेते हुये एवं उसे बँद कर बायीं नासिका से छोड़े । अर्थात् एक नासिका से श्वास लेते हुये दूसरी नासिका से छोड़ना व फिर दूसरी नासिका से लेते हुये पहली नासिका से छोड़ना ही अनुलोम-विलोम कहलाता है । यह क्रिया बाँयी नासिका से शुरु करें तथा बाँयी नासिका पर ही समाप्त करें ।

इस क्रिया को ५मिनट से १५मिनट तक कर सकते हैं । इस क्रिया को करते समय शरीर में और किसी प्रकार की क्रिया नहीं होनी चाहिये । थकने पर बीच-बीच में रुक सकते हैं ।

लाभ – इस क्रिया को करने से शरीर के हर भाग को अतिरिक्त प्राणवायु (Oxygen) प्राप्त होती है तथा शरीर की अनेक बीमारियाँ ठीक होती हैं ।

४. भ्रामरी (BHRAMARI)

इस क्रिया में अगूँठों से दोनों कानों को बन्द किया जाता है । तथा पहली उँगली माथे पर तो बाकी तीन उँगलियों से आँखों को बन्द करना चाहिये । फिर लम्बा श्वास भरकर उसे गले से भँवरे की आवाज की भाँति आवाज निकालते हुये नाक से श्वास को बाहर छोड़ते हैं । इस क्रिया को ५ से १५ बार तक कर सकते हैं ।

लाभ – इस भ्रामरी क्रिया के करने से सिर की बीमारियाँ ठीक होती हैं । मस्तिष्क को शक्ति मिलती है । (Epilepsy) की बीमारी ठीक हो जाती है ।

शव-आसन (SHAV-AASAN)

इस आसन को योग-निद्रा आसन के नाम से भी कहा जाता है । यह आसन उपरोक्त सब आसनों के करने के बाद ५ मिनट के लिये करना चाहिये । इस क्रिया में सीधे लेटना चाहिये एवं शरीर को ढीला छोड़ देना चाहिये । हाथों की हथेलियों का रूख आसमान की ओर तथा शरीर से कुछ दूरी पर होना चाहिये । व्यक्ति को सिर्फ श्वासों के तरफ ध्यान देना चाहिये ।

लाभ – १. इस क्रिया को करने से अन्य क्रियाओं की थकान दूर हो जाती है तथा शरीर को शक्ति मिलती है ।

२. जिस व्यक्ति को निद्रा न आती हो उसे इस आसन के करने से निद्रा आ जाती है । तथा निद्रा की बीमारी ठीक हो जाती है ।

सावधानियाँ NOTE

१. उपरोक्त क्रियायें जमीन या प्लास्टिक की चटाई पर नहीं करनी चाहिये । Carpet, Blanket या Bed Sheet बिछा कर कर सकते हैं ।
२. खुली हवा में करें । बन्द कमरे में न करें, क्योंकि फिर पूरा लाभ नहीं होगा ।
३. जो व्यक्ति जमीन पर नहीं बैठ सकते हैं वे कुर्सी पर बैठकर भी कर सकते हैं ।
४. इन क्रियाओं के करने के बाद व्यक्ति का "ध्यान-साधना"Meditation भी अच्छी प्रकार से हो सकता है । ■

.......*continued from page 2*

का पाठ व श्रद्धाञ्जलि सभा; तथा १६० वर्ष प्राचीन श्रीकबीर मन्दिर-क्लेमास्या में श्रद्धाञ्जलि-सत्संग महन्तों, सन्तों एवं भक्तों द्वारा किया गया ।

श्री कबीर काउँसिल में भारत-दिल्ली से श्री मोहर सिंह जी, श्री नन्दलाल जी श्रीमती संतोष देवी, सपरिवार श्री फूलसिंह जी, सपरिवार श्रीरामकुमार सिंह जी ११ अतिथि १० दिनों के लिये (२४मई से ३जून) पधारे । वे ज्येष्ठ (अधिक)पूर्णिमा में प्रमुख यजमान के रूप में भाग लिये व १२हजार रुपये दान भी दिये । हम सभी मॉरीशस के कबीर-पन्थी समाज उन महानुभावों का स्वागत करके बहुत आनन्दित हुये ।

इस पत्रिका में ६० भजन हैं जो हिन्दी व अँग्रेजी लिपि में हैं । पाठकों के ज्ञान के लिये "सुरति-शब्द योग" का सोपान-बद्ध महान् ग्रन्थ "श्रीमत्प्रकाशमणिगीता" का संक्षेप में विवेचन है । दिल्ली से पधारे श्री नन्दलाल जी दैनिक रूप से आसानी से करने योग्य प्राणायाम की विधियों पर सुन्दर लेख प्रदान किये हैं । श्री जय विशेसर जी ने अँग्रेजी में अपने उदात्त विचारों को प्रस्तुत किया है; इस पत्रिका के प्रकाशन में उनका बहुत सहयोग मिला है जिसके लिये "सत्यगुरुकबीर"पत्रिका परिवार उनका आभारी है । हम सद्गुरु कबीर साहेब जी के ६०९ वें प्राकट्यम-हामहोत्सव के पावन पर्व पर समस्त महन्त, सन्त, भक्त-हँस जनों को हार्दिक मङ्गलकामना प्रेषित कर रहे हैं ।

सन्त न छोड़ै सन्तई , कोटिक मिलै असन्त ।
मलय भुवङ्गम बेधिया , शीतलता न तजन्त ॥ ■

ekottarī

mūla mantra-dhyāna

o 'ham, so 'ham, jo 'ham, ko 'ham, po 'ham |
ādi po 'ham, anta po 'ham, madhya po ‘ham bhayā prakāśa ||
kahain kabīra suno dharmadāsa |
yaha pānca nāma satguru se pāve, sumirata hansa sataloka sidhāve ||

atha ekottaraśata satyapuruṣa nāma

ajara[1] acinta[2] akaha[3] avināśī[4] | ādibramha[5] amarapuravāsī[6] ||
adalī[7] amī[8] aneha[9] ajāvana[10] | ādināma[11] satasukṛta[12] gāvana ||
paramānanda[13] so akhila[14] sanehī[15] | satyanāma[16] satapuruṣa[17] videhī ||
nihakāmī[18] niha-akṣaravantā[19] | avigata[20] amara[21] apāra[22] anantā[23] ||
acala[24] abheda[25] su antarajāmī[26] | gurutama[27] aguna[28] ache viśrāmī[29] ||
agama[30] agocara[31] alakha[32] vidhānā[33] | abhaya[34] agāha su puruṣapurānā[35] ||
dīnabandhu[36] karuṇāmaya[37] soī[38] | dayāsindhu[39] hansanapati hoī ||
adhama-udhārana[40] mangalakārī[41] | hirambara[42] muni bramhaprasārī[43] ||
arūpa[44] athāha[45] anāhadarātā[46] | jogajīta[47] santanasukhadātā[48] ||
prakāśātma[49] muktagati[50] soī | saccidānanda[51] ujāgara[52] hoī ||
jogasantāyanapati[53] sukhasāgara[54] | sarvatīta[55] amiankura[56] āgara ||
viśvātmā[57] puruṣottama[58] kahiye | satyalokapati[59] vibhumana[60] gahiye ||
sarvadarśana[61] aura munīndrā[62] | amī[63] dvīpa[64] vijitātma mahendrā ||
sarvamayī[65] au sadāsanehī[66] | bhaktarāja[67] piū[68] gāve jehī ||
satasantoṣa[69] au śabdasarūpā[70] | prāṇanātha[71] sadguru[72] ju anūpā ||
janmanivāraṇa[73] bandīchorā[74] | śīlarūpa[75] śītala[76] ju bahorā ||
ajagaibī[77] au muktipradāyaka[78] | nāmaparāyaṇa[79] khyātasunāyaka[80] ||
santoṣapriya[81] prāṇapiyārā[82] | sthiranāmī[83] satasāhiba[84] dhārā ||
sohaṁśabda[85] abhayapadadātā[86] | haṁsasohaṅgama[87] nāma vikhyātā ||
poham[88] dvīpa mandana adhikāī[89] | hīrambara ḍorī rahi chāī ||
amola[90] asoca[91] asaṁśaya[92] dhīrā[93] | sāranāma[94] aḍola[95] śarīrā ||
sabayogāśraya[96] kavi[97] hai soī | dharmādhyakṣa[98] paramātama[99] hoī ||
santagatī[100] au śāntīdāyī[101] | kabīra ekottaraśata ye gāī ||

ekottarī kī mahimā

ye sabanāma raṭūn prabhu torā |
darśana dīje bandīchora ||
taba mahimā kā anta na pāūn |
kehi vidhi guṇa prabhu tumhare gāūn ||
antaradṛṣṭi dehuprabhu mohī |
jāte main lakhi pāūn tohī ||
sakala prakāśī rūpa jo torā |
so prabhū āya basai ūra morā ||
jāte ūra aṅdhiyāra ho dūrā |
gyāna bhānu kā camake nūrā ||
pūrṇarūpa te darśana pāūn |
jāte āvāgavana naśāūn ||
deha geha mohi kachu na suhāve |
bāra bāra tumharī sudhi āve ||
tava darśana binu talaphala prānā |
mīna nīra te jimi bilagānā ||
darśana de apanā kari līje |
jīvana janma kṛtāratha kīje ||
jama jālima kā chūṭe deśā |
dvandva sahita saba naśai kaleśā ||
antara dayā tumhārī hove |
pāpa tāpa sabahina ko khove ||
jimi darpaṇa mein jhalake nūrā |
eise darśana hoya hajūrā ||
taba main janma kṛtāratha mānūn |
janma-maraṇa kī śaṅka na ānūn ||
avicala pada yaha mokahan dīje |
jana apano śaraṇe kari līje ||
nāma ekottara prema te gāve |
hṛdaya śudhi ho parśana pāve ||
pratidina pāṭha kare lavalāī |
tāko āvāgavana naśāī ||
sākhī: *ekottaraśatanāma jo,*
paḍhe sunen mati dhīra |
hansa prakāśaka rūpa tehi,
deven guru kabīra ||